RNI No. MPHIN/25/A4421

दैनिक दिव्य संवाद

वर्ष 01 अंक: 47 | उज्जैन बुधवार दिनांक 25 मार्च 2026 फालगुन मास शुक्ल पक्ष सप्तमी संवत् 2083 | पृष्ठ: 8 मूल्य :02 रूपये

मौसम आज

तापमान

न्यूनतम - 16 डि.से.

अधिकतम - 35 डि.से.

न्यूज गैलरी

विदेश मंत्री जयशंकर ने मार्को रूबियो से की बात, पश्चिम एशिया संघर्ष और ऊर्जा सुरक्षा पर हुई चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष के बीच विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने अमेरिका के विदेश मंत्री से फोन पर बात की। इस दौरान पश्चिम एशिया संघर्ष और ऊर्जा सुरक्षा पर चर्चा हुई। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने एक्स पर पोस्ट कर बताया, अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो के साथ फोन पर विस्तार से बातचीत की। इस बातचीत का मुख्य विषय पश्चिम एशिया का संघर्ष और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर उसका प्रभाव था। जयशंकर ने कहा कि दोनों पक्षों ने विशेष रूप से ऊर्जा सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं पर भी ध्यान केंद्रित किया और एक-दूसरे के संपर्क में बने रहने पर सहमति जताई।

चुनाव आयोग ने मुफ्त प्रसारण के लिए राजनीतिक दलों को दिए डिजिटल वाउचर

नई दिल्ली (एजेंसी)। चुनाव आयोग ने सोमवार को असम, केरल, पुडुचेरी, तमिलनाडु और बंगाल में आगामी विधानसभा चुनावों के लिए दूरदर्शन और आकाशवाणी पर मुफ्त प्रसारण समय के लिए राष्ट्रीय और राज्य के राजनीतिक दलों को डिजिटल वाउचर आवंटित किए हैं। इस योजना के तहत प्रत्येक दल को राज्य के भीतर क्षेत्रीय नेटवर्क पर समान रूप से 45 मिनट का दूरदर्शन और आकाशवाणी पर मुफ्त प्रसारण समय आवंटित किया गया है। चुनाव आयोग ने कहा कि प्रसारण अवधि प्रत्येक चरण में उम्मीदवारों की सूची प्रकाशित होने की तिथि से लेकर मतदान की तिथि से दो दिन पहले तक निर्धारित की जाएगी। आयोग ने यह भी बताया कि राजनीतिक दलों को रिकॉर्डिंग और ट्रांसक्रिप्ट पहले से जमा करने होंगे और संबंधित दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करना होगा। रिकॉर्डिंग प्रसार भारती द्वारा निर्धारित तकनीकी मानकों को पूरा करने वाले स्टूडियो में या दूरदर्शन या आकाशवाणी केंद्रों में की जा सकती है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हितग्राहियों को वितरित किये कृषि यंत्र

मुख्यमंत्री दतिया जिले के भांडेर में राज्य स्तरीय किसान सम्मेलन में हुए शामिल

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत सभी क्षेत्रों में निरन्तर आगे बढ़ रहा है। दुनिया का कोई ऐसा देश नहीं, जहां संकट आया और प्रधानमंत्री श्री मोदी की पहल से भारतीय नागरिकों की घर वापसी सुनिश्चित न की गई हो। मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री मोदी के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंगलवार को दतिया जिले में आयोजित राज्य स्तरीय किसान सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने भगवान श्री बलराम को नमन करते हुए कहा कि किसान ही हमारे देश के भाग्य विधाता हैं। वे सूरज की तपती गर्मी में अपने परिश्रम से सभी के लिए अन्न उगाते हैं। कृषक कल्याण वर्ष में राज्य सरकार किसानों की समृद्धि के लिए संकल्पित है। प्रदेश के किसान आधुनिक कृषि यंत्रों से खेती करें, पशुपालन, मत्स्य पालन और कृषि आधारित उद्योग शुरू कर खाद्य प्र-संस्करण से अपनी आय दोगुनी करें। इसके लिए अनेक योजनाओं की सौगात दी जा रही है। अब हमारे किसान नरवाई प्रबंधन के लिए मशीनों से भूसा भी बना रहे हैं, जिससे उन्हें गेहूं और भूसा, दोनों से कमाई का सुनहरा मौका मिला है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश बहुत जल्द देश का नंबर-1 राज्य बनेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने किसान सम्मेलन में दतिया को 62.23 करोड़ के विकास कार्यों की सौगात दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने 62.23 करोड़ लागत के 12 विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन किया। इसमें भव्य सांदीपनि विद्यालय, दैवीय स्थल रतनगढ़ में यात्री निवास, स्टेडियम सहित अन्य विकास कार्य शामिल हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सम्मेलन में हितग्राहियों को कृषि यंत्र, पशुपालन, खाद्य प्र-संस्करण के लिए हितलाभ भी वितरित किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भगवान श्री कृष्ण ने अपना संपूर्ण जीवन जनकल्याण के लिए समर्पित कर दिया। प्रदेश के सांदीपनि विद्यालय बच्चों के सुनहरे भविष्य के मंदिर की तरह हैं। शासकीय स्कूलों में पढ़ाई करने वाले बच्चों को निःशुल्क किताबें, ड्रेस, साइकिलें, लैपटॉप और स्कूटी तक दी जा रही हैं। इसी शैक्षणिक सत्र से यशोदा योजना में बच्चों को दूध के पैकेट भी वितरित किये जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की सभी पात्र लाड़ली बहनों को हर महीने 1500 रुपए की राशि मिल रही है।

अब बुंदेलखंड अंचल से कोई किसान नहीं करेगा पलायन- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में सिंचाई का रकबा बढ़ाने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है। सिंचाई का रकबा कभी साढ़े 7 लाख हैक्टेयर था, जो अब बढ़कर 55 लाख हैक्टेयर तक पहुंच चुका है। पिछले 2 साल में सिंचित भूमि का रकबा लगभग दस लाख हैक्टेयर बढ़ गया है। केन-बेतवा लिंक नदी जोड़ो परियोजना के माध्यम से बुंदेलखंड अंचल और आसपास के जिलों के किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त जल मिलेगा। केंद्र सरकार ने मध्यप्रदेश को नदी जोड़ो परियोजना की महत्वपूर्ण सौगात दी है, जिसका लाभ उत्तर प्रदेश के कुछ जिलों को भी मिलेगा। अब बुंदेलखंड अंचल से कोई किसान पलायन करने को विवश नहीं होगा।

लघु कृषकों को किराये पर दिए जाएंगे कृषि यंत्र- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि किसान फसल काटने के बाद खेतों में नरवाई को न जलाएं, इससे भूमि की उर्वरा शक्ति क्षीण होती हैं। राज्य सरकार भूसा निर्माण के लिए हितग्राहियों को हैप्पी सीडर मशीनें प्रदान कर रही है। किसान भूसा बनाकर पास की गौशालाओं में बेचें। अब किसानों को गेहूं के साथ-साथ भूसे का भी पैसा मिलेगा। लघु कृषकों को समय पर किराये पर कृषि यंत्र मिल जाएं और उनकी खेती अच्छी हो जाए। इसके लिए विधानसभा स्तर पर कस्टम हायरिंग सेंटर यानी कृषि यंत्रों की किराये की दुकान खोली जा रही हैं। बदलते दौर में पर्याप्त बिजली ,सभी की जरूरत है। वर्षा काल के बाद सिंचाई के लिए किसानों को चौबीस घंटे बिजली उपलब्ध कराएंगे। किसानों के लिए अनेकों योजनाएं लागू की गई हैं।

दूध उत्पादन के साथ बढ़ेगी प्रदेश के किसानों की आय- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राज्य सरकार ने पशुपालन से किसानों की आय बढ़ाने के लिए डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना की शुरुआत की है। प्रदेश में दूध उत्पादन को 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने का संकल्प लिया है। कामधेनु योजना में 25 गाय पालने पर 40 लाख रुपए प्रति इकाई स्थापित करने की योजना में राज्य सरकार ने 10 लाख का अनुदान देने का निर्णय लिया है। किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य दिलवाने के लिए भावांतर भुगतान योजना से सोयाबीन पर लाभ दिया गया है। अब सरसों की फसल को भी भावांतर योजना में शामिल किया है। राज्य सरकार ने गेहूं उत्पादक किसानों को इस वर्ष समर्थन मूल्य पर 40 रुपए प्रति क्विंटल बोनस दिया है। आने वाले समय में किसानों से 2700 रुपए प्रति क्विंटल गेहूं खरीदेंगे। दतिया में धान, मूंगफली, गेहूं और चना की पैदावार बढ़ गई है। किसानों को हर साल 12 हजार रुपए (6 हजार केंद्र से, 6 हजार राज्य से) सम्मान निधि दी जा रही है।

भ्रष्टाचार से निपटने में संपत्ति रिकवरी महत्वपूर्ण, अंतरराष्ट्रीय सहयोग जरूरी- ईडी, सीबीआई

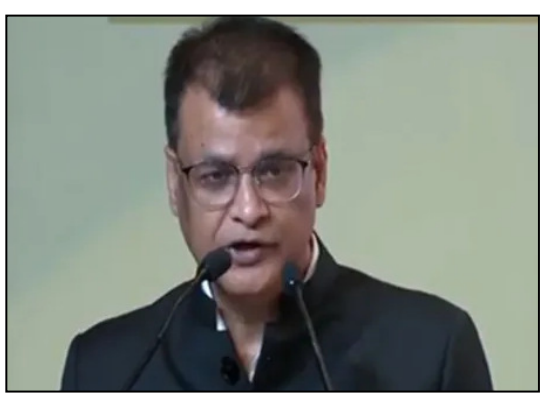

नई दिल्ली (एजेंसी)। भ्रष्टाचार-रोधी वैश्विक सम्मेलन में ईडी निदेशक राहुल नवीन ने सोमवार को कहा कि संपत्ति की रिकवरी, कार्रवाई के बाद का विचार नहीं है, बल्कि यह कानून के क्रियान्वयन की सफलता का वास्तविक पैमाना है। इसी कार्यक्रम में सीबीआइ निदेशक प्रवीण सूद ने कहा कि आज भ्रष्टाचार अंतरराष्ट्रीय, परिष्कृत और तकनीकी होता जा रहा है।

राजधानी दिल्ली में 23-25 मार्च तक आयोजित जीएलओबीई (ग्लोब) नेटवर्क की 12वीं संचालन समिति की बैठक के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए राहुल नवीन ने प्रिवेंशन आफ मनी लांड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत अपराध से अर्जित संपत्ति का पता लगाने, उसकी रोकथाम, जब्ती और वापस दिलाने के एजेंसी के दायित्व को रेखांकित किया।

कहा कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र संधि (यूएनसीएसी) में निहित आधुनिक भ्रष्टाचार-रोधी ढांचे के तहत संपत्ति की रिकवरी कानून के क्रियान्वयन की सफलता का सबसे सच्चा पैमाना है।

इस मामले में भारत के प्रदर्शन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि ईडी ने लगभग 5.6 अरब अमेरिकी डालर की संपत्ति वापस दिलाई है, जिसमें भ्रष्टाचार के मामलों से जुड़ी संपत्ति भी शामिल है। इस संपत्ति का बड़ा हिस्सा हाल के वर्षों में वापस दिलाया गया है।

ईडी निदेशक ने भारत की दो एजेंसियों की पूरक भूमिकाओं का भी उल्लेख किया। उन्होंने सीबीआइ को भ्रष्टाचार-रोधी जांच और अभियोजन की प्राथमिक संस्था और ईडी को वित्तीय जांच व संपत्ति की रिकवरी पर केंद्रित एजेंसी बताया। अंतरराष्ट्रीय सहयोग का उल्लेख करते हुए उन्होंने एक मामले में स्पेन द्वारा दी गई सहायता का उदाहरण दिया, जिसमें ग्लोब नेटवर्क के जरिये साझा की गई जानकारी के आधार पर औपचारिक चैनलों के जरिये संपत्ति को सीधे तौर पर जब्त किया जा सका।

उन्होंने जांच के शुरुआती चरणों में तेजी लाने के लिए ओपन सोर्स रजिस्ट्रियों की निर्देशिका की उपयोगिता का भी जिक्र किया।

सीबीआई निदेशक प्रवीण सूद ने कहा कि आधुनिक भ्रष्टाचार से निपटने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग विकल्प नहीं, बल्कि परम आवश्यकता है। उन्होंने ग्लोब नेटवर्क के सुरक्षित संचार मंच (एससीपी) को सदस्य देशों के अधिकारियों के बीच इंक्रिप्टेड और रीयल टाइम में जानकारी के आदान-प्रदान के लिए अत्यंत प्रभावी उपकरण बताया।

उन्होंने एजेंसियों से आग्रह किया कि वे कार्रवाई योग्य खुफिया जानकारी साझा करें और उपलब्ध सहयोगी तंत्रों का पूरा उपयोग करें। समन्वित प्रयासों पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि इस तरह की कार्रवाई यह सुनिश्चित कर सकती है कि अपराधियों को सजा मिले और अवैध संपत्ति बरामद हो।

गौरतलब है कि तीन दिवसीय इस सम्मेलन में ग्लोब नेटवर्क की संचालन समिति के 15 सदस्य देशों के प्रतिनिधि हिस्सा ले रहे हैं। यूएनसीएसी के तहत कार्यरत ग्लोब नेटवर्क में फिलहाल 135 देश और 250 प्राधिकारी शामिल हैं।

विकास परियोजनाओं का राजनीतिकरण..., मेट्रो के निर्माण में बाधा डालने के लिए बंगाल सरकार SC की फटकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को बंगाल सरकार को कोलकाता मेट्रो रेल परियोजना के एक गलियारे के निर्माण में रोड़ा अटकाने के लिए कड़ी फटकार लगाई और कहा कि आम जनता के हित वाली विकास परियोजना का राजनीतिकरण नहीं किया जाए। प्रधान न्यायाधीश (सीजेआइ) सूर्यकांत, जस्टिस जोयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल एम पंचोली की पीठ ने राज्य सरकार की याचिका खारिज करते हुए कलकत्ता हाई कोर्ट को परियोजना की निगरानी करने का निर्देश दिया।

पीठ ने कहा कि हाई कोर्ट ने राज्य सरकार के प्रति काफी उदारता दिखाई है। यह ऐसा मामला था, जिसमें बंगाल के मुख्य सचिव, डीजीपी और अन्य अधिकारियों पर कार्रवाई होनी चाहिए थी। सीजेआई ने बंगाल सरकार की ओर से पेश वकील से कहा कि यह आपके संवैधानिक कर्तव्यों की पूरी तरह अनदेखी को दर्शाता है। आप अपनी जिम्मेदारियों से भाग रहे हैं। सीजेआई सूर्यकांत ने कहा, हमें हर चीज का राजनीतिकरण नहीं करना चाहिये। यह विकास से जुड़ा मुद्दा है। यह आम जनता की सुविधा के लिये है। इसमें बाधाएं पैदा नहीं करें। जब राज्य सरकार के वकील ने दलील दी कि आगामी चुनावों के कारण आदर्श आचार संहिता लागू है और बोर्ड परीक्षाएं चल रही हैं तो पीठ ने कहा कि हाई कोर्ट का आदेश 23 दिसंबर 2025 का है और पूछा कि राज्य सरकार ने तब से अब तक निर्देशों का पालन क्यों नहीं किया।

जस्टिस बागची ने कहा कि चुनाव आयोग इस परियोजना पर आपत्ति नहीं कर सकता, क्योंकि यह पहले से चल रही है और हाई कोर्ट इसकी निगरानी कर रहा है। उन्होंने कहा कि यह परियोजना आदर्श आचार संहिता लागू होने से पहले शुरू की गई थी। हम राज्य को इसे फिर से विकास में बाधा डालने के बहाने के रूप में इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं देंगे।

राज्य सरकार के वकील ने कहा कि निर्माण कार्य के दौरान सड़कें बंद करनी पड़ेंगी, जिससे एंबुलेंस और आपातकालीन सेवाएं प्रभावित होंगी।

युवा आपदा मित्र प्रशिक्षण का शुभारंभ कलेक्टर द्वारा किया गया

युवा आपदा मित्रों की पर्व, त्यौहार व सिंहस्थ में महत्वपूर्ण भूमिका

दैनिक दिव्य संवाद उज्जैन।
मध्यप्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण गृह विभाग म.प्र. शासन के निर्देशानुसार जिला होमगार्ड कार्यालय उज्जैन में युवा आपदा मित्र योजना के अन्तर्गत द्वितीय सत्र का 07 दिवसीय प्रशिक्षण एनएसएस (राष्ट्रीय सेवा योजना) व युवा भारत के 165 प्रशिक्षणार्थीयों को होमगार्ड लाईन उज्जैन में दिनांक 23/03/2026 से आयोजित किया जा रहा है। जिसके प्रथम दिवस पर स्वयंसेवकों का रजिस्ट्रेशन किया गया। प्रशिक्षण के शुभारंभ कार्यक्रम में जिला कलेक्टर श्री रोशन कुमार सिंह मुख्य अतिथि के रूप में सादर उपस्थित हुये, जिनका स्वागत डिस्ट्रिक्ट कमाण्डेन्ट होमगार्ड उज्जैन श्री संतोष कुमार जाट ने पुष्पगुच्छ भेंट कर किया।

07 दिवसीय युवा आपदा मित्र प्रशिक्षण का शुभारंभ आज दिनांक 24/03/2026 जिला कलेक्टर उज्जैन श्री रोशन कुमार सिह मुख्यअतिथि के दीप प्रज्वलित कर किया गया। मुख्यअतिथि कलेक्टर श्री रोशन कुमार सिह ने आपदा मित्रों को संबोधित करते हुये कहा कि ÷ प्रशिक्षित

आपदा मित्रों की आगामी सिंहस्थ-2028 में कानून एवं घाट व्यवस्था डियूटी में आवश्यकता होगी एवं मुझे उम्मीद है कि सिंहस्थ कार्यो का सफल बनाने में आपदा मित्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी, साथ ही यह भी कहा कि यदि आपके समक्ष कोई रोड दुर्घटना होती है तो घायल व्यक्ति को एक मित्र की भांति अस्पताल पहुंचने में मद्द करें। आपदा प्रबंधन को लेकर जागरूकता एवं प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है, आपदा मित्र में महिला सदस्य भी बड़ चढ़ कर भाग ले रहीं हैं, जो कि अत्यंत प्रशंसनिय है।÷।

जिला कलेक्टर द्वारा इस अवसर पर होमगार्ड विभाग के द्वारा रामघाट पर किये जा रहे बचाव कार्यों की प्रशंसा करते हुये कहा कि होमगार्ड एवं एसडीईआरएफ के सैनिक, देश दुनिया से रामघाट पर स्नान करने आये लोगों की स्नान के दौरान दुर्घटना के समय जान बचाते हैं। यह होमगार्ड के द्वारा की जाने वाली मानवता की सेवा है, इसके लिये होमगार्ड विभाग प्रशंसा व बधाई का पात्र है।÷ इसके पश्चात मुख्यअतिथि द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे आपदा मित्रों को आपदा प्रबंधन किट प्रदाय की गई।

इस अवसर पर डिस्ट्रिक्ट कमाण्डेन्ट श्री संतोष कुमार जाट ने बताया, कि केन्द्र की युवा आपदा मित्र योजना के तहत प्रथम सत्र में 165 युवा आपदा मित्रों को विभिन्न आपदाओं से निपटने के लिये तैयार किया गया है। यह इस प्रशिक्षण श्रंखला का द्वितीय सत्र है। जिसमें 165 युवा आपदा मित्रों को प्राकृतिक, मानवजनित आपदाओं के दौरान बचाव के बारे में 07 दिवस का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इस प्रशिक्षण अवधि में आपदा मित्रों को बाढ़, भूकंप, भू-स्खलन, आगजनी सहित भगदड जैसी घटनाओं को रोकने की सिखलाई जिले के कुशल प्रशिक्षकों द्वारा दी जा रही है। इन आपदा मित्रों को आगामी अनिश्चित आपदाओं से निपटने के लिये मानसिक रूप से भी तैयार किया जा रहा है। इसी प्रकार निर्धारित लक्ष्य अनुसार 800 युवा आपदा मित्र वॉलेन्टियर्स को प्रशिक्षित कर तैयार किया जाना है। जो आगामी सिंहस्थ-2028 एवं जिले में आने वाली आपदाओं में मददगार होगें।

बेगम बाग में फिर चला बुलडोजर, 16 मकान हटाए

लीज समाप्ति और कोर्ट से स्टे हटने के बाद यूडीए की कार्रवाई तेज, सिक्स लेन सडक़ परियोजना को मिलेगी गति

दैनिक दिव्य संवाद उज्जैन। उज्जैन। शहर में सडक़ चौड़ीकरण परियोजना को गति देने के लिए यूडीए ने जिला प्रशासन के साथ मिलकर एक बार फिर बेगम बाग क्षेत्र में सख्त कार्रवाई की है। लीज अवधि समाप्त होने और न्यायालय से स्टे हटने के बाद मंगलवार सुबह विकास प्राधिकरण और नगर निगम की संयुक्त टीम ने 16 मकानों को हटाने की कार्रवाई शुरू की, जो शाम तक जारी रही।

उल्लेखनीय है कि हरि फाटक ओवरब्रिज से महाकाल चौराहे तक प्रस्तावित सिक्स लेन सडक़ के निर्माण के लिए यह कार्रवाई की जा रही है। बताया जा रहा है कि इस महत्वपूर्ण मार्ग के चौड़ीकरण के लिए जल्द ही टेंडर प्रक्रिया भी शुरू की जाएगी। पिछले लगभग एक वर्ष से विकास प्राधिकरण द्वारा लीज समाप्त होने के बाद बेगम बाग कॉलोनी में अतिक्रमण हटाने और मकानों को हटाने की कार्रवाई सुबह से शाम तक लगातार जारी रही। इसी क्रम में मंगलवार को विभिन्न प्लॉटों पर बने 16 मकानों को चिन्हित कर उन्हें हटाया गया। सुबह कार्रवाई के दौरान विकास प्राधिकरण के सीईओ संदीप सोनी, नगर निगम की टीम और जेसीबी मशीनें मौके पर मौजूद रहीं। किसी भी प्रकार के विरोध या अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए भारी पुलिस बल भी तैनात किया गया था। अधिकारियों के अनुसार, अब क्षेत्र में कुछ ही प्लॉट शेष बचे हैं, जिन्हें जल्द हटाकर पूरी जमीन को सिक्स लेन सडक़ निर्माण के लिए खाली कराया जाएगा। प्रशासन का कहना है कि यह परियोजना शहर के यातायात को सुगम बनाने में अहम भूमिका निभाएगी।

इन प्लाटों पर हुई कार्रवाई...

यूडीए सीईओ संदीप सोनी ने बताया कि लीज समाप्त होने के बाद आज जिन मकानों पर कार्रवाई की जा रही है उनमें भूखंड क्रमांक 66, होटल डायमंड जीकुन बी एवं अन्य के मकान है। वहीं भूखंड क्रमांक 66 ए के 3 भाग जिनमें खतीजा बी, मोहम्मद सलीम व नजमा बी के मकान हैं। भूखंड क्रमांक 67 ए पर हिना खान, भूखंड क्रमांक 68 ए पर मोहम्मद सलीम पिता लियाकत हुसैन, भूखंड क्रमांक 69 ए पर शाहनवाज खानस, भूखंड क्रमांक 68 बी पर अब्दुल हमीद, भूखंड क्रमांक 69 बी पर वारिस बेग, भूखंड क्रमांक 231 ए पर न्यू सावन पैलेस होटल राज गेस्ट हाउस, होटल नसीब जामा ए शकीब एजुकेशनल सोसाइटी, डॉक्टर महबूब खान, भूखंड क्रमांक 71 पर सरताज खान, भूखंड क्रमांक 72 पर जान मोहम्मद, भूखंड क्रमांक 73 पर मोहम्मद अनीस, भूखंड क्रमांक 74 पर ताहिर अली मोहम्मद यूनुस के भवनों पर कार्रवाई की गई।

महाअष्टमी पर निकलेगी नगर पूजा यात्रा, चौबीस खंबा माता को चढ़ेगा मदिरा भोग

निरंजनी अखाड़ा निभाएगा सदियों पुरानी परंपरा, 28 किमी मार्ग पर देवी-भैरव मंदिरों में ध्वज-चोला चढ़ेगा

दैनिक दिव्य संवाद उज्जैन। चैत्र नवरात्रि के अवसर पर शहर की सुख-समृद्धि और कल्याण की कामना को लेकर महाअष्टमी पर पारंपरिक नगर पूजा का आयोजन किया जाएगा। पंचायती अखाड़ा निरंजनी द्वारा आयोजित इस विशेष पूजा में प्राचीन परंपरा के अनुसार 24 खंबा माता मंदिर स्थित देवी महालया और महामाया माता को मदिरा का भोग अर्पित किया जाएगा।

महाष्टमी पर सुबह 8 बजे चौबीस खंभा स्थित माता महामाया और महालाया मंदिर से नगर पूजा यात्रा प्रारंभ होगी। यात्रा में अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत रविन्द्र पुरी महाराज सहित विभिन्न अखाड़ों के संत-महंत और महामंडलेश्वर शामिल होंगे। कोरोना काल में भी इस परंपरा का निर्वहन किया गया था, जिसे निरंतर जारी रखा गया है।

नगर पूजा के दौरान कोटवार एक हांडी में मदिरा लेकर करीब 28 किलोमीटर लंबे मार्ग पर चलते हैं। इस दौरान रास्ते में आने वाले प्रमुख देवी और भैरव मंदिरों में नए ध्वज और चोला चढ़ाया जाता है। कुछ स्थानों पर विशेष रूप से मदिरा अर्पित करने की भी परंपरा है, जिसे श्रद्धा के साथ निभाया जाएगा।

बैंड-बाजों और माता के जयकारों के बीच यात्रा शाम 8 बजे अंकपात मार्ग स्थित हांडी फोड़ भैरव मंदिर पर संपन्न होगी। इसके बाद बड़नगर रोड स्थित पंचायती अखाड़ा निरंजनी में भव्य कन्या पूजन और भंडारे का आयोजन किया जाएगा, जिसमें संत-महंतों के साथ जनप्रतिनिधि और अधिकारी भी शामिल होंगे।अखाड़ा परिषद के प्रवक्ता डॉ. गोविंद सोलंकी और डॉ. राहुल कटारिया के अनुसार नगर पूजा को लेकर देशभर, विशेषकर हरिद्वार से संतों का आगमन हो रहा है। वहीं आयोजन की तैयारियों में स्थानीय श्रद्धालु भी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

5 दिवसीय नि:शुल्क दर्द रहित फिजियो केयर शिविर का शुभारंभ

उज्जैन। श्री धन्वन्तरी आयुर्वेद चिकित्सा महाविद्यालय एवं शोध केंद्र न्यास उज्जयिनी तथा कॉटन मर्चेंट शैक्षणिक एवं परमार्थिक न्यास माधव गौशाला परिसर के संयुक्त तत्वावधान में मंगलवार से विशाल 5 दिवसीय नि:शुल्क दर्द रहित फिजियो केयर शिविर का शुभारंभ हुआ। यह शिविर 28 मार्च तक शहर के बम्बाखाना, लखेरवाड़ी स्थित पुराना कालिदास मॉन्टेसरी स्कूल परिसर में आयोजित किया जाएगा।

शिविर का विधिवत उद्घाटन ख्यात यूरो सर्जन डॉ. पुनीत महाडिक ने भगवान धन्वंतरि का पूजन और दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इसके पश्चात अभिषेक सावेरकर ने श्री धन्वंतरि वंदना प्रस्तुत की। मुख्य अतिथि डॉ. पुनीत महाडिक ने अपने उद्बोधन में शिविर में किए जा रहे कार्यों की बहुत सराहना की।

श्री साई फाउंडेशन द्वारा विद्यार्थियों को नि:शुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण एवं सामग्री वितरण

दैनिक दिव्य संवाद उज्जैन। आज श्री साई फाउंडेशन सोसाइटी द्वारा आयोजित नि:शुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन किया गया। इस अवसर पर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को टी-शर्ट एवं बैग वितरित किए गए।कार्यक्रम में संस्थान से जुड़े पदाधिकारियों एवं शिक्षकों की उपस्थिति में विद्यार्थियों को कंप्यूटर शिक्षा के महत्व के बारे में बताया गया। संस्था के प्रतिनिधियों ने कहा कि आज के डिजिटल युग में कंप्यूटर ज्ञान अत्यंत आवश्यक है, इसलिए श्री साई फाउंडेशन समय-समय पर इस प्रकार के नि:शुल्क प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता रहता है, ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी इसका लाभ उठा सकें।

प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को कंप्यूटर के मूलभूत ज्ञान, इंटरनेट उपयोग, तथा विभिन्न डिजिटल कार्यों की जानकारी दी गई। कार्यक्रम के अंतिम दिन सभी प्रतिभागी विद्यार्थियों को टी-शर्ट एवं बैग वितरित कर उनका उत्साहवर्धन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम संचालक शिखा शर्मा मुख्य अतिथि रामकन्या डाबी संस्था डायरेक्टर अभय नरवरिया संस्था सचिव तरुण चौरसिया कोषाध्यक्ष शुभम नरवरिया माला,तौसीफ,शेख,आरती, ज्योति प्रजापत,ज्योतिष सांखला,उपस्थित थे। सभी उपस्थित विद्यार्थी एवं शिक्षकों का योगिता तिवारी द्वारा आभार व्यक्त किया गया। विद्यार्थियों ने इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए संस्था का आभार व्यक्त किया और भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की अपेक्षा जताई। इस अवसर पर संस्था के सदस्य, प्रशिक्षकगण एवं सभी प्रशिक्षु विद्यार्थी उपस्थित रहे।

उज्जैन के शोधार्थियों ने झांसी में लहराया परचम

दैनिक दिव्य संवाद उज्जैन। झांसी। बुंदेलखंड विश्वविद्यालय में आयोजित ÷राष्ट्रीय हिंदी विज्ञान सम्मेलन 2025-26÷ में उज्जैन के शोधार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपनी प्रतिभा का परचम लहराया। देशभर से आए प्रतिभागियों के बीच उज्जैन की सहभागिता विशेष रूप से सराहनीय रही।

सम्मेलन के प्रथम दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ योग गुरु डॉ. मिलिन्द्र त्रिपाठी के मार्गदर्शन में उज्जैन योग संस्थान की राष्ट्रीय खिलाड़ी अंजलि मोरे द्वारा प्रस्तुत योगमय शिव स्तुति से हुआ, जिसने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया।

सेमिनार में देशभर से योग विषय पर कुल 54 वैज्ञानिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। इनमें उत्कृष्ट वैज्ञानिक शोध पत्र प्रस्तुति के लिए उज्जैन के शोधार्थी संगीता मेहर, अर्पित मीणा, आयुषी तिवारी, अंजलि ओरे एवं जूही गेहलोत को सम्मानित किया गया। यह उपलब्धि उज्जैन के शोध क्षेत्र में बढ़ते प्रभाव और गुणवत्ता को दर्शाती है। उल्लेखनीय है कि सम्मेलन में उज्जैन के योग गुरु डॉ. मिलिन्द्र त्रिपाठी को विषय विशेषज्ञ एवं अतिथि व्याख्याता के रूप में विशेष आमंत्रण प्राप्त हुआ। इस अवसर पर मंचासीन मुख्य अतिथियों में उत्तर प्रदेश सरकार की राज्य मंत्री (महिला, बाल विकास एवं पुष्टाहार) प्रतिभा शुक्ला, विज्ञान भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ. शिव कुमार शर्मा, पूर्व सांसद अनिल शुक्ला, पद्मश्री एच. सी. वर्मा,प्रबुद्धवानन्द जी सरस्वती, कुलगुरु डॉ. मुकेश पाण्डेय, कुलगुरु प्रमोद कुमार वर्मा सहित डॉ. एस.पी. गौतम, डॉ. पी.सी. दुबे, डॉ. जयप्रकाश शुक्ला, सुरेन्द्र मिश्रा, विज्ञान भारती के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री प्रवीण रामदास, डॉ. अनु सिंगला, डॉ. अनुपम व्यास, डॉ. प्रियंका पाठक, डॉ. शुभांगी निगम, डॉ. सुमिरन श्रीवास्तव, रवि कुमार, इंजी. एपीएस गौर, डॉ. कौशल त्रिपाठी, उमेश शुक्ल, डॉ. राघवेंद्र दीक्षित, अतीत विजय, शाश्वत सिंह एवं राम मिश्रा उपस्थित रहे। उज्जैन के शोधार्थियों की इस उपलब्धि पर शिक्षण संस्थानों एवं गुरुओं ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी है। यह सफलता न केवल उज्जैन, बल्कि पूरे मध्यप्रदेश के लिए गर्व का विषय है।

28 मार्च को शहर में नहीं होगा पानी सप्लाय

दैनिक दिव्य संवाद उज्जैन। शहर के जलप्रदाय नेटवर्क में सुधार और सडक़ चौड़ीकरण के कार्यों के चलते नगर निगम ने 27 मार्च को शटडाउन का निर्णय लिया है। इस कारण 28 मार्च शनिवार को पूरे शहर में पेयजल की आपूर्ति नहीं होगी।

पहले यह शटडाउन 24 मार्च को प्रस्तावित था और 25 मार्च को नल नहीं आने थे। अब इस शेड्यूल में परिवर्तन कर दिया गया है। नगर निगम के अनुसार, गंभीर नदी से आने वाली मुख्य राइजिंग मेनलाइन (गऊघाट हेतु) पर दो महत्वपूर्ण कार्य किए जाने हैं। सडक़ विस्तार के मार्ग में आ रही पाइपलाइनों का संधारण और शहर की जल व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए नई नर्मदा लाइन को मुख्य पाइप लाइन और ग्रिड से जोडऩा। इसके लिए यह शटडाउन किया जाना है।

उज्जैन में गैस एजेंसियों की मनमानी, उपभोक्ताओं पर थोपे जा रहे अतिरिक्त शुल्क

नली, बीमा और केवाईसी के नाम पर वसूली; नाराज लोगों ने किया चक्का जाम, प्रशासन से कार्रवाई की मांग

दैनिक दिव्य संवाद उज्जैन। शहर में गैस संकट के बीच उपभोक्ताओं की परेशानियां कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। एक ओर जहां गैस सिलेंडर की बुकिंग मुश्किल से हो पा रही है, वहीं दूसरी ओर डिलीवरी के दौरान गैस एजेंसियों द्वारा उपभोक्ताओं पर अनावश्यक खर्च का दबाव बनाया जा रहा है। कहीं 180 रुपए की गैस नली खरीदने के लिए मजबूर किया जा रहा है तो कहीं 380 रुपए लेकर एक साल का सुरक्षा बीमा कराने की शर्त रखी जा रही है।

स्थिति इतनी गंभीर हो गई है कि कई स्थानों पर केवाईसी के नाम पर भी उपभोक्ताओं को डिलीवरी देने से इंकार किया जा रहा है। जबकि अधिकांश उपभोक्ताओं का कहना है कि वे हाल ही में केवाईसी प्रक्रिया पूरी कर चुके हैं और कुछ ने तो छह महीने पहले ही गैस नली भी खरीदी थी। इसी तरह की मनमानी के विरोध में एक दिन पहले शहर के एटलस चौराहे पर उपभोक्ताओं का गुस्सा फूट पड़ा और उन्होंने चक्का जाम कर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि गैस एजेंसी संचालक आपदा की स्थिति में अवसर तलाशते हुए लोगों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डाल रहे हैं। महिला उपभोक्ताओं ने बताया कि उन्हें पहले ही लाड़ली बहना योजना के तहत सुरक्षा बीमा का लाभ मिल चुका है, इसके बावजूद एजेंसियों द्वारा पुन- बीमा कराने का दबाव बनाया जा रहा है, जो पूरी तरह अनुचित है। उपभोक्ताओं ने कलेक्टर रोशन कुमार सिंह और खाद्य एवं आपूर्ति विभाग से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। उनका कहना है कि यदि जल्द ही इस समस्या का समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन और तेज किया जाएगा।

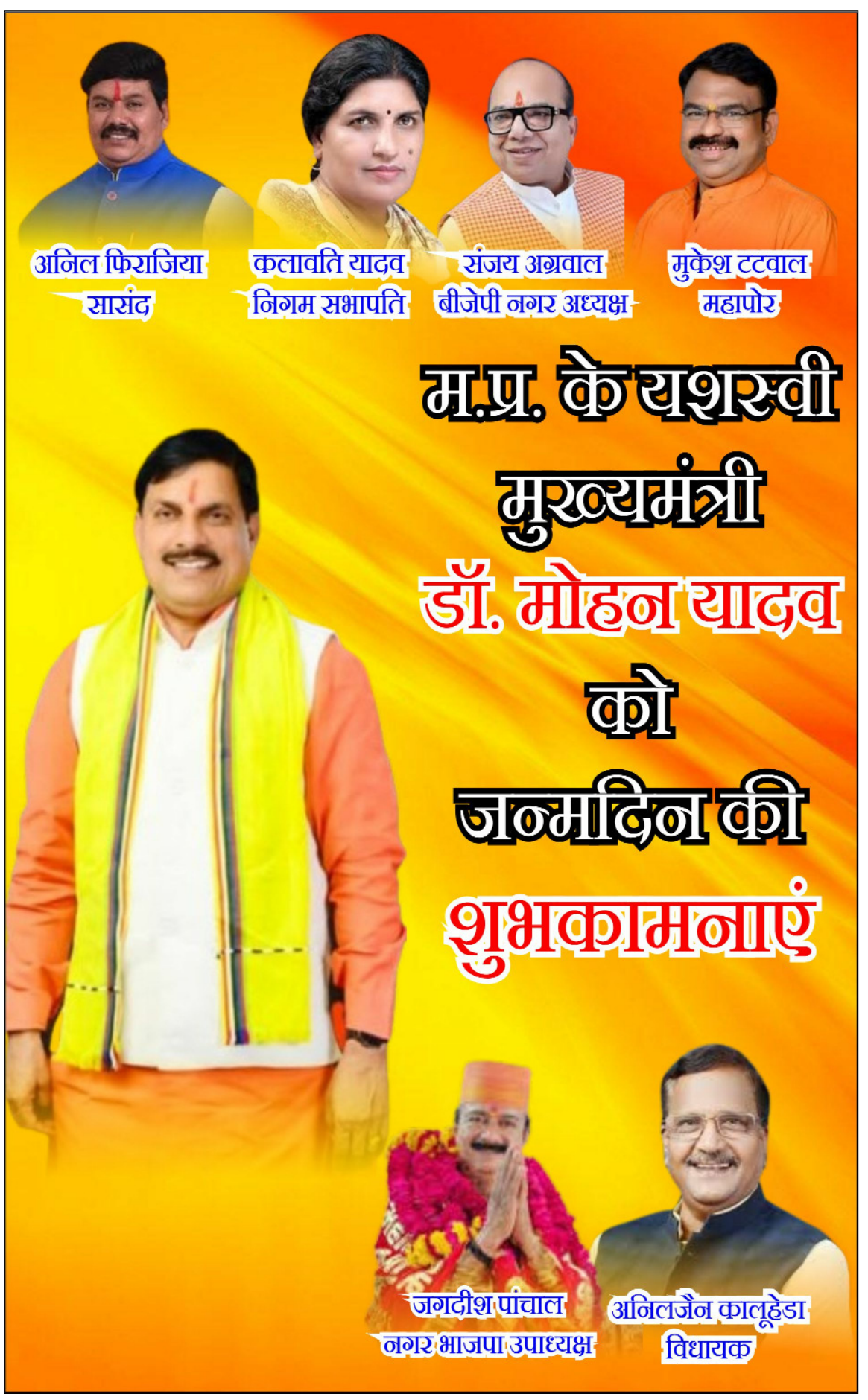

उज्जैन स्मार्ट सिटी लिमिटेड को xxrd Conclave – India Smart Cities E&po 2026 में "Smart Surveillance & Public Safety" श्रेणी के अंतर्गत प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया है

दैनिक दिव्य संवाद उज्जैन। उज्जैन स्मार्ट सिटी लिमिटेड को xxrd Conclave – India Smart Cities E&po 2026 में "Smart Surveillance & Public Safety श्रेणी के अंतर्गत प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान शहर में सुरक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने एवं आधुनिक तकनीकों के प्रभावी उपयोग के लिए प्रदान किया गया है।

यह पुरस्कार उज्जैन स्मार्ट सिटी लिमिटेड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय के नेतृत्व में किए गए उत्कृष्ट कार्यों का परिणाम है। इस सम्मान को संस्था की ओर से श्री संदीप शिवा द्वारा ग्रहण किया गया।

उज्जैन स्मार्ट सिटी द्वारा स्थापित उन्नत निगरानी प्रणाली, इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर (ICCC), सीसीटीवी नेटवर्क, ट्रैफिक मैनेजमेंट एवं आपातकालीन प्रतिक्रिया तंत्र ने शहर की सुरक्षा व्यवस्था को एक नई दिशा प्रदान की है। इन तकनीकी पहलों के माध्यम से नागरिकों की सुरक्षा, यातायात नियंत्रण तथा त्वरित आपातकालीन सहायता सुनिश्चित की जा रही है।

इस उपलब्धि पर अधिकारियों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मान टीम की कड़ी मेहनत, समर्पण एवं नवाचार का प्रतीक है। भविष्य में भी उज्जैन स्मार्ट सिटी लिमिटेड द्वारा नागरिक सुरक्षा एवं स्मार्ट गवर्नेंस के क्षेत्र में ऐसे ही प्रभावी प्रयास जारी रहेंगे।

यह सम्मान उज्जैन को एक सुरक्षित, स्मार्ट एवं तकनीकी रूप से सशक्त शहर के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

शिप्रा पुत्र मोहन....

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के जन्मदिन पर विशेष विजन

विकास और विरासत का विस्तृत विश्लेषण

मध्यप्रदेश की धार्मिक राजधानी उज्जैन और उसकी जीवनदायिनी शिप्रा नदी के बीच सदियों पुराना रिश्ता है। यह केवल एक नदी नहीं, बल्कि आस्था, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और सभ्यता का आधार है। इसी शिप्रा के संरक्षण और उज्जैन के समग्र विकास को अपना लक्ष्य बनाने वाले मुख्यमंत्री मोहन यादव को शिप्रा पुत्र कहना एक सशक्त और सार्थक विशेषण है।

उनके जन्मदिन पर प्रस्तुत यह विशेष आलेख केवल उपलब्धियों का विवरण नहीं, बल्कि उज्जैन के अतीत, वर्तमान और भविष्य के विकास मॉडल का विश्लेषण है।

भावनात्मक जुड़ाव से नीतिगत संकल्प तक....

- डॉ. मोहन यादव का शिप्रा से जुड़ाव राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और व्यक्तिगत है।
- शुरुआती पहल (2000 के दशक)
- जब वे उज्जैन विकास प्राधिकरण (ष्ट) के अध्यक्ष थे, तब उन्होंने
- शिप्रा तीर्थ परिक्रमा यात्रा शुरू की
- गुड़ी पड़वा (हिंदू नववर्ष) पर विक्रम उत्सव का आयोजन प्रारंभ किया
- शिप्रा तट पर चुनरी अर्पण परंपरा शुरू की

परिणाम

- स्थानीय आस्था को संगठित रूप मिला
- धार्मिक पर्यटन की नींव पड़ी
- सांस्कृतिक आयोजनों का वार्षिक कैलेंडर बना

शिप्रा प्रदूषण: समस्या की जड़ और ऐतिहासिक विफलताएं

मुख्य प्रदूषण स्त्रोत

- 20+ बड़े नाले सीधे शिप्रा में गिरते रहे
- कान्ह नदी का दूषित जल
- इंदौर-देवास औद्योगिक अपशिष्ट
- पिछले प्रयास (2005-2022)
- 100-150 करोड़ रुपए की योजनाएं

कान्ह डक्ट क्लोज योजना: तकनीकी और रणनीतिक समाधान....

प्रोजेक्ट का मूल सिद्धांत

शिप्रा को साफ करने के लिए केवल सफाई नहीं, बल्कि प्रदूषण के स्त्रोत को रोकना जरूरी था।

प्रमुख घटक..

- डक्ट सिस्टम निर्माण
- प्रदूषित जल का डायवर्जन
- ट्रीटमेंट के बाद पुन: उपयोग

वित्तीय और तकनीकी विवरण...

- लागत: लगभग 450-500 करोड़
- पाइपलाइन/डक्ट लंबाई: दर्जनों किलोमीटर
- निगरानी: रियल-टाइम मॉनिटरिंग सिस्टम

समयसीमा

- लक्ष्य सिंहस्थ 2028 से पहले पूर्ण

अपेक्षित परिणाम

- शिप्रा में प्रदूषण 70 - 80% तक कम
- स्नान योग्य जल गुणवत्ता
- धार्मिक आयोजनों में स्वच्छता
- सेवरखेड़ी-सिलारखेड़ी जलाशय योजना: 'सतत शिप्रा' का मॉडल...

समस्या

- शिप्रा एक मौसमी नदी है—गर्मी में जलस्तर घट जाता है।
- योजना का समाधान
- वर्षा जल संग्रहण
- नियंत्रित तरीके से शिप्रा में जल प्रवाह

प्रोजेक्ट डिटेल...

- **लागत 300-350 करोड़**
- जलाशय क्षमता: लाखों क्यूबिक मीटर
- पाइपलाइन/कैनाल नेटवर्क
- दीर्घकालिक प्रभाव
- 12 महीने जल उपलब्धता
- पर्यावरणीय संतुलन
- भूजल स्तर में 10-15% सुधार (अनुमानित)

29 किमी घाट निर्माण: विश्वस्तरीय तीर्थ इंफ्रास्ट्रक्चर...

- भौगोलिक विस्तार
- त्रिवेणी संगम से मंगलनाथ मंदिर
- आगे सिद्धवट तक

प्रोजेक्ट लागत और संरचना...

- लागत: 600-700 करोड़
- लंबाई: 29 किमी

मुख्य सुविधाएं

- पक्के घाट और सीढ़ियां
- LED लाइटिंग
- CCTV निगरानी
- चेंजिंग रूम, शौचालय
- आपातकालीन मेडिकल पॉइंट

सिंहस्थ में उपयोगिता

- एक समय में लाखों श्रद्धालु स्नान कर सकेंगे
- भीड़ प्रबंधन आसान
- 80% तक कम

महाकाल महालोक के बाद-धार्मिक कॉरिडोर विस्तार...

- महाकाल महालोक ने उज्जैन को वैश्विक पहचान दी।
- शनि लोक प्रोजेक्ट
- स्थान: नवग्रह त्रिवेणी शनि मंदिर क्षेत्र
- लागत 250-300 करोड़

विशेषताएं

- थीम आधारित कॉरिडोर
- आध्यात्मिक अनुभव केंद्र
- डिजिटल इंटरएक्टिव गैलरी

परिणाम

- धार्मिक पर्यटन में 30-40% वृद्धि (अनुमानित)
- स्थानीय रोजगार

हेल्थ सेक्टर: मेडिकल हब बनने की दिशा...

- मेडिकल कॉलेज और मेडिसिटी
- कुल लागत 700-800 करोड़
- बेड क्षमता: 500-1000 (प्रस्तावित)

सुविधाएं

- सुपर स्पेशलिटी
- ट्रॉमा सेंटर
- रिसर्च यूनिट

लाभ

- उज्जैन-इंदौर रीजन को फायदा
- मेडिकल टूरिज्म

ट्रांसपोर्ट और कनेक्टिविटी: स्मार्ट उज्जैन का आधार...

- ओवरब्रिज और रेलवे ओवरब्रिज...
- कुल: 20-25 प्रोजेक्ट
- लागत: 1000-1200 करोड़

सड़क नेटवर्क

- फोरलेन/सिक्स लेन हाईवे
- शहर की आंतरिक सड़कों का चौड़ीकरण

प्रभाव

- ट्रैफिक जाम में 40% कमी (अनुमानित)
- यात्रा समय में कमी
- ऊर्जा और जल प्रबंधन: भविष्य की तैयारी...

विद्युत प्रोजेक्ट

- नए 132 KV सब-स्टेशन
- लागत: 200-250 करोड़
- जल और सीवरेज
- नई सीवरेज लाइन
- STP अपग्रेड
- नल-जल योजना विस्तार

लाभ

- 24×7 बिजली
- स्वच्छ जल
- बेहतर स्वच्छता

सिंहस्थ 2028: 50 साल की मास्टर प्लानिंग...

- सिंहस्थ 2028 केवल आयोजन नहीं, बल्कि इंफ्रास्ट्रक्चर का टेस्ट है।
- तैयारियां: -मल्टी-लेवल पार्किंग
- अस्थायी से स्थायी ढांचे
- डिजिटल ट्रैफिक मैनेजमेंट

दीर्घकालिक दृष्टि: -अगले 50 वर्षों की जरूरतों के अनुसार विकास

- करोड़ों श्रद्धालुओं के लिए स्थायी सुविधाएं

आर्थिक और सामाजिक प्रभाव...

- पर्यटन, 2-3 गुना वृद्धि की संभावना
- होटल, गाइड, ट्रांसपोर्ट सेक्टर में उछाल
- रोजगार, हजारों प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार
- शहरी विकास
- स्मार्ट सिटी मॉडल
- बेहतर जीवन स्तर

विजन, विरासत और विकास का संगम...

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में उज्जैन एक नए युग की ओर बढ़ रहा है, जहां परंपरा और आधुनिकता का संतुलन दिखाई देता है।

शिप्रा पुत्र की पहचान केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि उनके द्वारा किए गए सतत, संरचित और दूरदर्शी प्रयासों का परिणाम है। यदि ये सभी परियोजनाएं तय समय में पूरी होती हैं, तो आने वाले वर्षों में उज्जैन न केवल भारत, बल्कि विश्व का प्रमुख आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटन केंद्र बनकर उभरेगा और इसकी धड़कन बनी रहेगी शिप्रा, जिसे पुनर्जीवित करने का श्रेय शिप्रा पुत्र मोहन को जाएगा।

संपादकीय

कैसे तैयार होंगे वृद्धि के नए दौर के हालात

अधिकतर लोग मानते हैं कि आर्थिक वृद्धि होना तय है, यह होती रहती है और लंबे समय तक जारी रहती है। यह धारणा अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम जैसे देशों के अनुभवों पर आधारित है। इन देशों में लंबे समय तक कम औसत वृद्धि दर देखी गई है, जो स्थिर बनी रही है।

वे संचय की शक्ति से वहां तक पहुंचे। 1820 से 200 वर्षों तक 1.5 फीसदी प्रति व्यक्ति वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि ने उन्हें करीब 20 गुना बढ़ा दिया। इस दीर्घकालिक औसत के साथ उतार-चढ़ाव के दौर भी आए। विश्व युद्ध हुए, मंदी आई और महामंदी भी झेलनी पड़ी। अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम जैसे देशों की बौद्धिक एवं संस्थागत क्षमताएं इन चुनौतियों से निपटने, सामाजिक सौहार्द बरकरार रखने और लोगों के लिए सुरक्षा तथा आशावाद का माहौल बनाने में कामयाब रहीं। उनकी वजह से तमाम चुनौतियों के बीच भी कम स्थिर वृद्धि बरकरार रही।

भारत में हममें से कई लोग आसानी से इस भ्रम में फंस सकते हैं कि दीर्घकालिक स्थिर वृद्धि दर तैयार होती है और उसके इर्दगिर्द कारोबारी उतार-चढ़ाव नजर आते हैं। लेकिन अल्पविकास ऐसे काम नहीं करता। विकास की वृहद आर्थिकी खरगोश से मेल खाती है कछुए से नहीं। भारत की बात करें तो ऐसे स्पष्ट दौर आए हैं जिन्होंने हमें अपने विचार बनाने में मदद की है। सबसे पहले 1947 से 1962 तक 15 वर्ष में हमने अच्छी वृद्धि की। औपनिवेशिक दमन से हमें राहत मिली। राजनीतिक और अफसरशाही नेतृत्व भी उच्चस्तरीय था। देश के समाजवाद का दमनकारी तंत्र शुरू नहीं हुआ था और 1757 से 1947 तक के दौर की तुलना में वृद्धि तेज हुई थी।

उसके बाद बुरे वर्ष आए। 1962, 1965 और 1971 में युद्ध हुए, जो महंगे भी रहे और भावनात्मक जख्म भी दे गए। जवाहरलाल नेहरू की मौत ने राजनीतिक जटिलताएं पैदा कीं। दो बार सूखा पड़ा। दमनकारी कानूनों के साथ भारतीय समाजवाद अस्तित्व में आया। राज्य की क्षमता सुस्त होने के कारण ही वे कानून लागू हुए। इस कारण 1962 से 1976 तक 14 वर्ष का बुरा दौर रहा।

भारत के अपवाद होने की बात पर प्रश्नचिह्न लगा और हम तीसरी दुनिया के किसी आम देश की तरह नजर आने लगे, जहां सरकार स्वतंत्रता को कुचल रही थी और आर्थिक वृद्धि को नुकसान पहुंचा रही थी। उस दौर में वृद्धि 3.5 फीसदी की 'हिंदू वृद्धि दर' पर ठहर गई।

जनता पार्टी के शासन में मोरारजी देसाई, एच एम पटेल और डीटी लाकड़ावाला के साथ पहला उदारीकरण आरंभ हुआ। इंदिरा गांधी और राजीव गांधी ने इसे आगे बढ़ाया। इसके परिणामस्वरूप 1979 से 1991 के दौरान वृद्धि को मामूली गति मिली। उसके बाद 1991 में अधिक उदारीकरण आया और तब से 2011 तक 20 साल में हमें मजबूत वृद्धि देखने को मिली। देश में वृद्धि का सबसे बेहतरीन दौर 1991 से 2011 के बीच रहा और अपवाद के तौर पर भारत की स्थिति एक बार फिर पुख्ता हो गई।

सन 1947 से 1961, 1962 से 1976, 1977 से 1990 और फिर 1991 से 2011 के बीच औसत वृद्धि में काफी उतार-चढ़ाव आया। यह कोई परिपक्व समाज नहीं है, जहां राजनीतिक संस्थान स्थिर हों और विकास का इंजन लंबे अरसे तक स्थिर गति से चलता रहता हो। इसके बजाय यह ऐसा समाज है, जिसने कभी-कभी बौद्धिक स्पष्टता और अभिजातों के बीच शक्ति संतुलन के समझौतों के जरिये खुद को दुरुस्त किया तथा वृद्धि हासिल की।

कारोबार और वित्त की दुनिया में अक्सर कोई दौर तीन से सात वर्ष का होता है। मुख्य कार्यकारी अधिकारियों की लक्ष्य हासिल करने की अवधि अक्सर छोटी अवधि ही होती है। इस माहौल में कई लोग उस गहरी घटना को समझने से चूक जाते हैं, जो कारोबारी और वित्तीय सफलता को गढ़ती है। भारत जैसे देश में, जहां धीमी चाल से लगातार बढ़ते रहने पर सफलता की गारंटी नहीं होती वहां कारोबारी दुनिया में रणनीतिक सोच को सामाजिक शक्तियों पर विचार करने की जरूरत है और यह भी देखने की जरूरत है कि वृद्धि के लिए कैसी स्थितियां अनुकूल हैं।

आइए प्रत्येक दौर के आरंभ और अंत पर नजर डालते हैं। वृद्धि के दौर जटिल सामाजिक घटना होते हैं और उनके पीछे कोई एक कारण नहीं बताया जा सकता। इनमें से हरेक दौर में कई बातें एक साथ घटित हुईं। हर सफल दौर उससे पहले के 20 से 40 वर्षों के ज्ञान का नतीजा था। वृद्धि के सफल दौर के बीच में गलतियों के ऐसे बीज बो दिए गए, जिन्होंने आगे जाकर उस दौर को समाप्त कर दिया। इसके पीछे हम 1962 के चीन युद्ध जैसी तयशुदा तारीखों की बात करते हैं लेकिन उस दौर में वृद्धि को नुकसान पहुंचने की बुनियाद दूसरी पंचवर्षीय योजना (1956-61) के दौरान हुई बौद्धिक नाकामियों ने रख दी थी।

भारत में वृद्धि का दौर आने के लिए वैश्विक अर्थव्यवस्था मायने रखती है। वैश्विक अर्थव्यवस्था का एक बेहतर दौर 1989 में बर्लिन की दीवार गिरने के साथ शुरू हुआ। रक्षा व्यय में भारी कमी आई और वैश्विक शांति के फायदे नजर आने लगे। उदार पूर्वी दुनिया में लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं पर संगठित हमलों का अंत हुआ। भय कम हो गया। कई देशों में समझदारी भरी आर्थिक नीतियां आईं। निरंतर वैश्वीकृत होती दुनिया में हर देश की आर्थिक मजबूती ने दूसरे को सशक्त किया। पीवी नरसिंह राव और अटल बिहारी वाजपेयी ने विदेश नीति और आर्थिक क्षेत्र में जो समझदारी भरे कदम उठाए उसके पीछे वजह यह थी कि उन्होंने वामपंथ की नाकामी को देख लिया था, जिसके कारण उन्होंने सोवियत रूस तथा समाजवादी नीतियों से नाता तोड़ लिया। एकतरफा उदारता हमेशा अच्छा विचार होता है और इन वर्षों के दौरान विश्व अर्थव्यवस्था के बेहतर प्रदर्शन ने भी मदद की।

आज वैश्विक हालात चुनौती भरे हैं। राजनीतिक और आर्थिक नीति में बदलाव के जो बीज पूरी दुनिया में बोए जा रहे हैं, वे अच्छे प्रतीत नहीं हो रहे। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का व्लादीमिर पुतिन के साथ खास रिश्ता नजर आता है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने शक्ति संतुलन बिगाड़कर उसका पलड़ा दक्षिणपंथी राष्ट्रवाद और लोकलुभावनवाद की दिशा में काफी झुका दिया है। पश्चिम के इतिहास को देखें तो यह अस्वाभाविक नजर आता है।

विकसित देशों की बौद्धिक और संस्थागत क्षमता के सामने अभूतपूर्व चुनौतियां हैं। उनके लिए सामाजिक सौहार्द बरकरार रखना और लोगों के लिए सुरक्षा एवं आशावाद का माहौल बनाए रखना बहुत मुश्किल हो रहा है। क्या कछुआ अपनी चाल से चलता रहेगा? क्या यह 1861 से 1865 के अमेरिकी गृह युद्ध की तुलना में मामूली झटका भर है? क्या विकसित देशों में वृद्धि का रुझान कमजोर पड़ेगा? यह आज का बहुत बड़ा सवाल है। भारत के लिए संदर्भ इसी से तय होता है। हम वृद्धि के अगले दौर के लिए हालात कैसे तैयार कर सकते हैं? हमें वैश्विक आर्थिक कठिनाइयों से होने वाले संभावित प्रतिकूल प्रभावों, चीन की आक्रामकता से होने वाले खतरे और देश में बौद्धिक तथा संस्थागत गुणवत्ता की मुश्किलों पर विचार करना होगा।

जलवायु परिवर्तन से बचना कठिन होता जा रहा है

मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक, इस साल वायुमंडल का औसत तापमान औद्योगिकीकरण से पहले के तापमान की तुलना में 1.54 डिग्री सेल्सियस बढ़ गया है. ग्लोबल वार्मिंग के कारणों की जांच करने और इसे रोकने के लिए जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन 1996 से आयोजित किया जा रहा है। 2015 के पेरिस शिखर सम्मेलन में तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के लिए सभी संभव उपाय करने पर सहमति व्यक्त की गई थी। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी थी कि अगर ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन बंद कर दिया गयायदि नहीं, तो 2028 तक तापमान 1.5 डिग्री से अधिक हो जाएगा, जिसके बाद सूखा, बाढ़ और तूफान जैसी आपदाओं से निपटना और तापमान वृद्धि को रोकना और अधिक कठिन हो जाएगा। सदस्य देशों ने अपनी-अपनी परिस्थितियों के अनुसार जलवायु परिवर्तन को रोकने के प्रयास किये हैं, लेकिन तापमान वृद्धि की गति से पता चलता है कि वे अपर्याप्त रहे हैं। अज़रबैजान की राजधानी बाकू में हाल ही में संपन्न संयुक्त राष्ट्र जलवायु शिखर सम्मेलन में केवल दो उल्लेखनीय समझौते हो सके। पहला कार्बन क्रेडिट योजना पर था, जो लगभग दस वर्षों से लंबित थी। दूसरा हवा-पानीपरिवर्तन की रोकथाम के लिए वित्तीय सहायता पर। वह भी इस डर से कि अमेरिका की बागडोर जलवायु परिवर्तन को महत्व नहीं देने वाले ट्रंप के हाथों में जा रही है. इसमें विकासशील देश चाहते थे कि तापमान को मौजूदा स्तर पर लाने में प्रमुख भूमिका निभाने वाले विकसित देश उन्हें स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी के लिए सालाना कम से कम 1300 अरब डॉलर की वित्तीय सहायता देना शुरू करें, लेकिन अमीर देश रो रहे हैं सालाना सिर्फ 300 अरब डॉलर देने को तैयार वो भी 2035 से. अमीर देशों का कहना है कि प्रस्तावित राशि मौजूदा 100 अरब डॉलर हैउससे तीन गुना, इसलिए विकासशील देशों को नाराज़ होने के बजाय खुश होना चाहिए, लेकिन विकासशील देशों का कहना है कि यह ज़रूरत का एक चौथाई भी नहीं है. इसीलिए भारत की प्रतिनिधि चांदनी रैना ने इसे ऊंट के मुंह में तिनका बताया. उन्होंने कहा कि यह समझौता मृगतृष्णा से ज्यादा कुछ नहीं है. इससे इस गंभीर चुनौती का सामना करने में कोई खास मदद नहीं मिलेगी. विकासशील एवं छोटे गरीब देशों ने इस सम्मेलन की कड़ी आलोचना की। हर साल जलवायु शिखर सम्मेलन में किए गए समझौते और बड़े वादेइसके बावजूद तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी से पता चलता है कि या तो अब तक उठाए गए कदम अपर्याप्त हैं या फिर उन्हें ईमानदारी से लागू नहीं किया जा रहा है। स्टैनफोर्ड में पढ़ाने वाले आर्थिक इतिहासकार वाल्टर डेल की प्रसिद्ध पुस्तक द ग्रेट लेवलर के अनुसार, मानव इतिहास में वास्तविक परिवर्तन हमेशा बड़े पैमाने पर विलुप्त होने के कारण हुए हैं। जलवायु परिवर्तन को बड़े पैमाने पर विनाश की ओर ले जाने से रोकने के लिए ठोस और तीव्र उपाय करने के बजाय हर साल होने वाली अंतहीन बातचीत शीडेल को सही साबित करती है, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता है किजलवायु परिवर्तन पर वैश्विक सहमति किसी अन्य मुद्दे पर कभी नहीं बन पाई है। इसीलिए बिल गेट्स का मानना ??है कि हम एक ऐसे युग समझौते पर पहुंच गए हैं जो इतिहास बदल देगा। नई और स्वच्छ प्रौद्योगिकियों के विकास से जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाली बड़ी आपदाओं की रोकथाम हो सकेगी। सौर, पवन, जल और परमाणु से स्वच्छ ऊर्जा की लागत में तेजी से गिरावट और साथ ही कम ऊर्जा खपत करने वाले वाहनों और मशीनों के विकास के साथ, बिल गेट्स के शब्द विश्वसनीय हैं, लेकिन जयईंधन से चलने वाले वाहनों, कारखानों और बिजली संयंत्रों को स्वच्छ ऊर्जा प्रणाली में बदलने के लिए आवश्यक 11,000 अरब डॉलर का निवेश कहां और कैसे आएगा, इसका जवाब किसी के पास नहीं है। बाकू में 2035 से 300 अरब डॉलर की सालाना मदद का वादा किया गया है. क्या तब तक तापमान स्थिर रहेगा? विकसित देशों ने भी विकासशील देशों से आयात पर कार्बन कर लगाना शुरू कर दिया है। यूरोपीय संघ के कार्बन कैप समायोजन तंत्र से भारत जैसे देशों में निर्यातकों के लिए लागत बढ़ जाएगी। इसीलिए विकसित देशबढ़ते तापमान में अपनी भूमिका की याद दिलाते हुए वित्तीय सहायता के लिए दबाव बनाए रखने के अलावा, चीन जैसे विकासशील देशों को जलवायु की रक्षा के लिए स्वयं प्रभावी उपाय करने होंगे। सबसे बड़ा ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जक देश बनने के साथ-साथ चीन स्वच्छ ऊर्जा और उस पर आधारित प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा उत्पादक भी बन गया है। उन्होंने विकसित देशों का मुंह बंद रखने के लिए आर्थिक सहायता में योगदान देने की पहल भी की है. एक तिहाई ग्रीनहाउस गैसें खाद्य उत्पादन, प्रसंस्करण और आपूर्ति से जुड़े उद्योगों से आती हैंहो रहे हैं, जिनकी रोकथाम पर गंभीरता से चर्चा तक नहीं हो रही है। विश्व के जैव ईंधन का लगभग 15 प्रतिशत कृषि और उर्वरकों तथा कीटनाशकों के उत्पादन में खपत होता है। घरेलू पशुओं द्वारा उत्सर्जित मीथेन गैस भी तापमान वृद्धि में प्रमुख योगदानकर्ता है। खाद्य प्रसंस्करण, प्रशीतन, पैकेजिंग और आपूर्ति उद्योग भी जैव ईंधन पर चलते हैं। स्वच्छ ऊर्जा के साथ कृषि चलाने और आयातित खाद्य पदार्थों के बजाय ताजा और मौसमी खाद्य पदार्थों और मांस के बजाय शाकाहार को प्रोत्साहित करने से, लगभग एक तिहाई ग्लोबल वार्मिंग गैसों से बचा जा सकता है।लेकिन विकसित और विकासशील देशों में किसान और खाद्य उद्योग इतने संगठित हैं कि किसी भी सरकार के पास इतने बड़े बदलावों के लिए उन पर दबाव बनाने की इच्छाशक्ति नहीं है। भारत में इस तथ्य के बावजूद कि दिल्ली सहित पूरा उत्तर भारत हर साल एसिड कोहरे की चादर से ढका रहता है, यह न तो चुनावों में मुख्य मुद्दा बन पाता है और न ही संसद में इस पर कोई सार्थक चर्चा होती है। 1950 के आसपास लंदन का वायु गुणवत्ता सूचकांक या दिल्ली से भी बदतर हुआ करता था। आज दिल्ली की जीडीपी से कई गुना ज्यादा देने के बावजूद लंदन का औसत है20 पर कोई नहीं रहता और दिल्ली 150 पर जो अक्टूबर में 400 को पार कर जाता है। 2013 में बीजिंग का AQI 600 और सिंगापुर का 400 पार कर गया था. आज बीजिंग और सिंगापुर दोनों का AQI दिल्ली से काफी कम है।

डिजिटल गिरफ्तारी और उसका प्रभाव

विजय गर्ग – डिजिटल गिरफ्तारी एक आधुनिक विचार है जो ऐसी दुनिया में उभरा है जहां प्रौद्योगिकी हमारे जीवन में बहुत बड़ी भूमिका निभाती है। डिजिटल गिरफ्तारी से तात्पर्य व्यक्तियों की गतिविधियों को प्रतिबंधित करने या निगरानी करने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग से है, विशेष रूप से आभासी स्थानों में। इसका मतलब कुछ कारणों से डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म या सेवाओं तक पहुंच सीमित करना भी हो सकता है। यह विचार और अधिक प्रासंगिक हो गया है क्योंकि समाज संचार, कार्य, मनोरंजन और रोजमर्रा की जिंदगी के लिए इंटरनेट और डिजिटल प्रणालियों पर तेजी से निर्भर हो रहा है। गिरफ्तारी शब्द आम तौर पर कानून प्रवर्तन द्वारा शारीरिक संयम को संदर्भित करता है। हालाँकि, जब डिजिटल दुनिया पर लागू किया जाता है, तो इसका एक अलग अर्थ हो जाता है। डिजिटल गिरफ्तारी में प्रतिबंध भौतिक नहीं बल्कि आभासी होता है। इसमें किसी की सोशल मीडिया तक पहुंच को निलंबित करना, उनके खातों को लॉक करना, इंटरनेट सेवाओं को ब्लॉक करना या यहां तक कि उनकी ऑनलाइन गतिविधियों पर नज़र रखने के लिए निगरानी उपकरणों का उपयोग करना जैसे उपाय शामिल हैं। यह विभिन्न कारणों से हो सकता है, जिसमें ऑनलाइन नियमों का उल्लंघन, आपराधिक व्यवहार का संदेह या वर्चुअल स्पेस में कानूनों को लागू करने के प्रयास शामिल हैं। डिजिटल गिरफ्तारी स्वैच्छिक या अनैच्छिक हो सकती है। कुछ मामलों में, लोग या संगठन अपनी डिजिटल गतिविधियों को अस्थायी रूप से प्रतिबंधित करना चुन सकते हैं। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति ब्रेक लेने या अन्य प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपने सोशल मीडिया खातों को निष्क्रिय कर सकता है। दूसरी ओर, अनैच्छिक डिजिटल गिरफ्तारी तब होती है जब कोई बाहरी प्राधिकरण प्रतिबंध लगाता है। इसमें सरकारी एजेंसियां, कंपनियां या यहां तक ??कि किसी अन्य की डिजिटल उपस्थिति को नियंत्रित करने की तकनीकी क्षमता वाले निजी व्यक्ति भी शामिल हो सकते हैं। डिजिटल गिरफ्तारी की वृद्धि डिजिटल बुनियादी ढांचे के विस्तार से निकटता से जुड़ी हुई है। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी उन्नत हुई है, सरकारों और संगठनों ने डिजिटल व्यवहार की निगरानी और नियंत्रण के लिए परिष्कृत उपकरण विकसित किए हैं। उदाहरण के लिए, सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म में एल्गोरिदम होते हैं जो हानिकारक सामग्री का पता लगाते हैं और चिह्नित करते हैं। यदि कोई उपयोगकर्ता बार-बार सामुदायिक दिशानिर्देशों का उल्लंघन करता है, तो उसका खाता निलंबित या स्थायी रूप से प्रतिबंधित किया जा सकता है। हालाँकि इस तरह की कार्रवाइयों का उद्देश्य एक सुरक्षित ऑनलाइन वातावरण बनाना है, लेकिन ये निष्पक्षता और पारदर्शिता पर भी सवाल उठाते हैं। लोग अक्सर आश्चर्य करते हैं कि कौन निर्णय लेता है कि क्या स्वीकार्य है और क्या नियम समान रूप से लागू होते हैं। दुनिया भर की सरकारों ने भी कानून और व्यवस्था बनाए रखने के लिए डिजिटल उपकरणों को अपनाया है। निगरानी प्रणालियाँ व्यक्तियों के ऑनलाइन व्यवहार को ट्रैक कर सकती हैं, जिसमें उनके द्वारा देखी जाने वाली वेबसाइटें, उनके द्वारा भेजे गए संदेश और उनके द्वारा पोस्ट की गई सामग्री शामिल है। कुछ देशों में, अधिकारी संभावित खतरों की पहचान करने, अपराधों को रोकने और नियमों को लागू करने के लिए इन उपकरणों का उपयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, गलत सूचना फैलाने के संदेह वाले किसी व्यक्ति को अपनी ऑनलाइन गतिविधियों पर प्रतिबंध का सामना करना पड़ सकता है। हालाँकि इन उपायों का उद्देश्य समाज की रक्षा करना है, लेकिन ये गोपनीयता और शक्ति के दुरुपयोग के बारे में चिंताएँ भी बढ़ाते हैं। डिजिटल गिरफ्तारी के क्षेत्र में कंपनियां एक और प्रमुख खिलाड़ी हैं। इंटरनेट सेवा प्रदाताओं, सॉफ़्टवेयर डेवलपर्स और सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म के पास डिजिटल संसाधनों तक पहुंच को नियंत्रित करने की शक्ति है। उदाहरण के लिए, यदि कोई उपयोगकर्ता किसी प्लेटफ़ॉर्म की सेवा की शर्तों का उल्लंघन करता है, तो कंपनी उनके खाते को ब्लॉक या प्रतिबंधित कर सकती है। इसमें सामग्री पोस्ट करने, दूसरों के साथ बातचीत करने या यहां तक ??कि प्लेटफ़ॉर्म तक पूरी तरह से पहुंचने की उनकी क्षमता को सीमित करना शामिल हो सकता है। कंपनियां वित्तीय कारणों से भी प्रतिबंध लगा सकती हैं, जैसे सदस्यता शुल्क का भुगतान न करने पर खातों को निलंबित करना। डिजिटल गिरफ्तारी व्यक्तियों तक सीमित नहीं है। संगठन और यहाँ तक कि संपूर्ण क्षेत्र भी ऐसा कर सकते हैंडिजिटल प्रतिबंधों का अनुभव करें। उदाहरण के लिए, सरकारें विरोध प्रदर्शन, राजनीतिक अशांति या राष्ट्रीय सुरक्षा चिंताओं के जवाब में कुछ वेबसाइटों या सोशल मीडिया प्लेटफार्मों तक पहुंच को अवरुद्ध कर सकती हैं। ऐसा अक्सर सूचना के प्रवाह को नियंत्रित करने और गलत सूचना या असहमति के प्रसार को रोकने के लिए किया जाता है। हालाँकि ऐसे उपाय कभी-कभी व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक होते हैं, वे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को भी सीमित कर सकते हैं और संचार में बाधा डाल सकते हैं। डिजिटल गिरफ्तारी का एक अन्य पहलू साइबर अपराध को संबोधित करने में इसकी भूमिका है।

जैसे-जैसे इंटरनेट आधुनिक जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है, यह आपराधिक गतिविधियों का स्थान भी बन गया है। साइबर अपराधी हैकिंग, पहचान की चोरी और ऑनलाइन धोखाधड़ी जैसी गतिविधियों में संलग्न हैं। इन खतरों से निपटने के लिए, अधिकारी अपराधियों की पहचान करने और उन्हें पकड़ने के लिए डिजिटल उपकरणों का उपयोग करते हैं। कुछ मामलों में, इसमें किसी संदिग्ध की डिजिटल उपकरणों या नेटवर्क तक पहुंच को प्रतिबंधित करना शामिल हो सकता है। साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ऐसी कार्रवाइयां महत्वपूर्ण हैं लेकिन व्यक्तिगत अधिकारों के सम्मान के साथ संतुलित होनी चाहिए। डिजिटल गिरफ्तारी सामाजिक परिवर्तन का एक उपकरण भी हो सकती है। कार्यकर्ता और संगठन कभी-कभी मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए कुछ डिजिटल प्लेटफार्मों या सेवाओं के बहिष्कार का आह्वान करते हैं। उदाहरण के लिए, लोग ऐसे प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करना बंद कर सकते हैं जिसके बारे में उनका मानना ??है कि यह हानिकारक सामग्री को बढ़ावा देता है या उपयोगकर्ताओं के अधिकारों का उल्लंघन करता है। स्वैच्छिक डिजिटल गिरफ्तारी का यह रूप कंपनियों और सरकारों पर नैतिक प्रथाओं को अपनाने के लिए दबाव डालने का एक प्रभावी तरीका हो सकता है। इसके संभावित लाभों के बावजूद, डिजिटल गिरफ्तारी में महत्वपूर्ण कमियां हैं। एक बड़ी चिंता दुरुपयोग की संभावना है। सत्ता में बैठे लोग आलोचकों को चुप कराने, असहमति को दबाने या विशिष्ट समूहों को निशाना बनाने के लिए डिजिटल प्रतिबंधों का उपयोग कर सकते हैं। यह उन देशों में विशेष रूप से चिंताजनक है जहां बोलने की स्वतंत्रता सीमित है और प्राधिकार पर कमजोर नियंत्रण है। ऐसे मामलों में, डिजिटल गिरफ्तारी सुरक्षा और व्यवस्था सुनिश्चित करने के साधन के बजाय उत्पीड़न का एक उपकरण बन सकती है। एक अन्य चिंता व्यक्तियों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण पर डिजिटल गिरफ्तारी का प्रभाव है। आज की परस्पर जुड़ी दुनिया में, डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म से कट जाना अलग-थलग और परेशान करने वाला महसूस हो सकता है। लोग अपने प्रियजनों के साथ संपर्क में रहने, जानकारी हासिल करने और खुद को अभिव्यक्त करने के लिए इंटरनेट पर भरोसा करते हैं। जब यह पहुंच छीन ली जाती है, तो इसका उनकी भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक स्थिति पर गंभीर परिणाम हो सकता है। इसके अलावा, डिजिटल प्रतिबंध शिक्षा, रोजगार और व्यक्तिगत विकास के अवसरों को सीमित कर सकते हैं, खासकर उन लोगों के लिए जो ऑनलाइन संसाधनों पर निर्भर हैं। डिजिटल गिरफ्तारी कानूनी और नैतिक सवाल भी उठाती है। डिजिटल प्रतिबंध लगाने का अधिकार किसे है और किन परिस्थितियों में? दुरुपयोग को रोकने के लिए क्या सुरक्षा उपाय मौजूद हैं? व्यक्ति अनुचित या मनमाने कार्यों को कैसे चुनौती दे सकते हैं? ये जटिल मुद्दे हैं जिन पर सरकारों, संगठनों और समग्र रूप से समाज के बीच सावधानीपूर्वक विचार और निरंतर बातचीत की आवश्यकता है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए, डिजिटल गिरफ्तारी के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश और नियम स्थापित करना आवश्यक है। डिजिटल व्यवहार की निगरानी और नियंत्रण के लिए पारदर्शी प्रक्रियाएँ बनाने के लिए सरकारों और संगठनों को मिलकर काम करना चाहिए। इसमें यह सुनिश्चित करना शामिल है कि प्रतिबंध वैध कारणों पर आधारित हों, निष्पक्ष रूप से लागू हों और समीक्षा के अधीन हों। साथ ही, व्यक्तियों की निजता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सूचना तक पहुंच के अधिकारों की रक्षा करना भी महत्वपूर्ण है। डिजिटल गिरफ्तारी की जटिलताओं से निपटने में शिक्षा और जागरूकता भी महत्वपूर्ण हैं। लोगों को उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जानकारी दी जानी चाहिएई डिजिटल स्पेस, साथ ही उनके कार्यों के संभावित परिणाम। डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देकर, समाज व्यक्तियों को प्रौद्योगिकी का जिम्मेदारी से उपयोग करने और उन स्थितियों से बचने के लिए सशक्त बना सकता है जो प्रतिबंध का कारण बन सकती हैं। डिजिटल गिरफ्तारी हमारे जीवन में प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है। यह एक शक्तिशाली उपकरण है जिसका उपयोग अच्छे या बुरे के लिए किया जा सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि इसे कैसे लागू किया जाता है। हालाँकि यह सुरक्षा बढ़ाने, नियमों को लागू करने और डिजिटल युग में चुनौतियों का समाधान करने के अवसर प्रदान करता है, लेकिन यह गोपनीयता, स्वतंत्रता और निष्पक्षता के लिए जोखिम भी पैदा करता है। जैसे-जैसे हम इस उभरते परिदृश्य को आगे बढ़ाते हैं, डिजिटल गिरफ्तारी के लाभों और चुनौतियों के बीच संतुलन बनाना आवश्यक है, यह सुनिश्चित करना कि यह व्यक्तिगत अधिकारों का सम्मान करते हुए समाज के हितों की सेवा करता है।

वार्षिक पत्रिका शिक्षण संस्थान के लिए एक ऐतिहासिक दस्तावेज है

विद्यार्थी जीवन मानव जीवन का एक रोचक एवं महत्वपूर्ण समय होता है। आज, अनिवार्य स्कूली शिक्षा के समान अवसर ने हर बच्चे को स्कूल तक ला दिया है। माता-पिता भी चाहते हैं कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करके सफल इंसान बनें। व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और अन्य शैक्षणिक संस्थान अपने मानकों को बनाए रखने के लिए नई तकनीकों, इंटरनेट, शिक्षा विशेषज्ञों के व्याख्यान, मनोवैज्ञानिकों की सलाह, विकसित देशों के शिक्षा मॉडल का उपयोग करते हैं।फॉलो आदि करते रहते हैं। आजकल प्रिंट/ऑडियो/वीडियो मीडिया और सोशल साइट्स के माध्यम से भी प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। ये संस्थान अपने छात्रों के लिए संस्थान की वार्षिक पत्रिका सहित विभिन्न सुविधाओं या पहलों की व्यवस्था भी करते हैं। इंटरनेट के आगमन से पहले, शैक्षणिक संस्थान और वार्षिक पत्रिकाएँ एक दूसरे के पूरक थे। विद्यार्थी और शिक्षक पत्रिका के प्रकाशन का बेसब्री से इंतजार करते थे। अब इंटरनेट पर पत्रिकाओं की जगह सोशल साइट्स लेती जा रही हैं। उनकी अपनी उपयोगिता पी होगीशिक्षण संस्थानों की पत्रिकाओं के झंडे आज भी लहरा रहे हैं। ये पत्रिकाएँ, जिन्हें पत्रिकाएँ भी कहा जाता है, उनके शैक्षणिक संस्थान यानी कॉलेज, विश्वविद्यालय या स्कूल की एक खिड़की हैं। इसके माध्यम से सत्र के दौरान उस संस्थान की शैक्षणिक, खेल-कूद, सह-शैक्षणिक गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक एवं अन्य आयोजनों तथा कई अन्य गतिविधियों का विवरण कुछ पन्नों के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किया जाता है। इन गतिविधियों की तस्वीरें सोने पर खूबसूरती से चित्रित की गई हैं। उपरोक्त गतिविधियों में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के चित्र कहाँइससे उन्हें बेहद खुशी होती है और अन्य छात्रों को भी प्रेरणा मिलती है। कहते हैं, गुरु बिनु गत नहीं, शाह बिनु पात। ऐतिहासिक दस्तावेज़ नवोदित छात्रों, लेखकों के व्यक्तिगत कार्य रोचक, ज्ञानवर्धक और शिक्षाप्रद हैं। पत्रिका में पृष्ठों की सीमा के कारण साहित्यिक कृतियों विशेषकर निबंध, कहानियाँ, लघु यात्रा वृतांत तथा शोध पत्रों में संक्षिप्तता का गुण होना चाहिए। यह पत्रिका कई लेखकों के लिए साहित्य के क्षेत्र में पहला कदम भी हो सकती है। संगठन की वार्षिक पत्रिका की अगली विशेषता उसका अपना संगठन हैएक ऐतिहासिक दस्तावेज़ प्रकाशित किया जाना है।

आवश्यकता पड़ने पर किसी भी समय वर्तमान जानकारी पिछले संस्करणों से प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा संस्था का पत्रिका से भावनात्मक जुड़ाव भी है. यदि यह पत्रिका थोड़े या लम्बे समय के बाद हमारे हाथ में रह जाती है तो यह हमें हमारे विद्यार्थी जीवन में वापस ले जाती है। रचनात्मक कला से युक्त पत्रिकाएँ स्कूल शिक्षा विभाग की यह एक बड़ी पहल है कि हर साल बाल दिवस के अवसर पर प्रत्येक सरकारी स्कूल की वार्षिक पत्रिका का विमोचन किया जाता है। प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों का अपनाहाथ से बनाई गई पेंटिंग और अन्य रचनात्मक कला से एक पत्रिका बनाएं। महाविद्यालयों जैसे बड़े विद्यालयों में संपादक एवं सम्पादक मंडल नियमित रूप से पत्रिका प्रकाशित कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। शिक्षक और विद्यार्थी, लेखक और पाठक, विद्यालय और पत्रिका के बीच सहयोग का महत्व बना रहना चाहिए। उपलब्धि की ओर शिक्षक नेतृत्व शिक्षकों का अच्छा मार्गदर्शन छात्रों को महत्वपूर्ण उपलब्धियों की ओर ले जाता है। अपने छात्रों की सफलता से शिक्षकों को खुशी और गर्व महसूस होता है। इस प्रकार वार्षिक पत्रिका विद्यार्थी एवं शिक्षक दोनों के लिए समान महत्व रखती है. पत्रिकाएँ पाठकों को साहित्य से जोड़े रखती हैं। मोबाइल फोन के असीमित उपयोग या अन्य व्यस्तताओं के कारण लोग साहित्य से दूर होते जा रहे हैं। पाठकों की कमी के कारण लेखकों को उचित प्रतिक्रिया और आर्थिक लाभ नहीं मिल पा रहा है। साहित्य से मार्गदर्शन पाने के लिए साहित्य से जुड़ना बहुत जरूरी है। इससे लेखकों को उनका उचित सम्मान भी मिलता है. लेखक और पाठक अपनी मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं से भी जुड़े रहते हैं।

अब 56 दुकान के व्यंजन पकेंगे पीएनजी गैस पर, एलपीजी की किल्लत के बाद अपनाया विकल्प

इंदौर। इंदौर में स्वाद के लिए मशहूर 56 दुकान फूड स्ट्रीट एलपीजी की किल्लत के बावजूद ग्राहकों के बीच अपना स्वाद बरकरार रखे हुए है। कमर्शियल सिलिंडर नहीं मिलने के बाद कई दुकानदारों ने इंडक्शन खरीद लिए थे, लेकिन बिजली जाने के दौरान परेशानी न हो, इसलिए अब पाइप्ड नैचरल गैस (पीएनजी) के विकल्प को भी अपनाया जा रहा है। अवंतिका गैस कंपनी ने गैस की किल्लत के बाद 56 दुकान व्यापारी संघ से संपर्क किया और कनेक्शन देने की पेशकश की। पहले प्रेशर और धीमी आंच को लेकर कुछ समस्याएं थीं, लेकिन अब वे दूर हो गई हैं और पंद्रह से ज्यादा दुकानदार कनेक्शन लेने के लिए तैयार हो गए हैं। इंदौर में अभी भी कमर्शियल सिलिंडर की किल्लत बनी हुई है और जो व्यापारी घरेलू सिलिंडरों का उपयोग दुकानों में खाना बनाने के लिए कर रहे हैं, प्रशासन उन्हें जब्त कर रहा है। इस कारण दुकानदारों ने पीएनजी और इंडक्शन जैसे विकल्प अपनाने शुरू कर दिए हैं। 56 दुकान एसोसिएशन के अध्यक्ष गुंजन जोशी ने बताया कि गैस कनेक्शन देने वाली कंपनी के अधिकारियों ने उनसे चर्चा की थी। इसके बाद बैठक में सदस्यों के सामने यह विकल्प रखा गया, जिस पर कई दुकानदारों ने सहमति जताई और कनेक्शन भी ले लिए। कंपनी की गैस पाइपलाइन पास से ही गुजर रही थी, इसलिए कनेक्शन में कोई विशेष परेशानी नहीं हुई। इंदौर में अभी भी कमर्शियल गैस सिलिंडरों की बुकिंग नहीं हो पा रही है। इस वजह से कई छोटे दुकानदारों ने काम बंद कर दिया है। सराफा बाजार में सोने के आभूषण बनाने का काम भी प्रभावित हो रहा है।

घरेलू गैस सिलिंडर अब लोगों को लगभग 25 दिन बाद बुकिंग के बाद मिल पा रहे हैं।

होटल संचालकों ने सरकार को घेरा, बोले- 20% नहीं हमें चाहिए 50% गैस सिलेंडर

इंदौर। मध्य प्रदेश में कमर्शियल गैस सिलेंडरों की किल्लत ने होटल और रेस्टोरेंट उद्योग की कमर तोड़ दी है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अमेरिका, ईरान और इजरायल के बीच जारी युद्ध के कारण देश में गैस आपूर्ति बाधित हुई है। केंद्र सरकार द्वारा शुरुआत में आपूर्ति बंद करने के बाद इसे 20 प्रतिशत तक बहाल करने के निर्देश दिए गए थे, लेकिन जमीनी स्तर पर यह राहत अब तक व्यवसायियों तक नहीं पहुंच सकी है। होटल और रेस्टोरेंट संचालकों की बढ़ती परेशानियों को देखते हुए मध्य प्रदेश होटल एंड रेस्टोरेंट एसोसिएशन के अध्यक्ष सुमित सूरी ने खाद्य आपूर्ति सचिव रश्मि अरुण शमी से भोपाल में संपर्क किया। प्रदेश भर के होटल संगठनों के प्रतिनिधियों का कहना है कि केंद्र के 20 प्रतिशत आपूर्ति के आदेश के बावजूद राज्य सरकार की ओर से अब तक कोई स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी नहीं हुए हैं, जिससे स्थानीय स्तर पर वितरण व्यवस्था ठप पड़ी है।

सूरी ने कहा हमने सरकार के सामने अपनी मांगे रखी हैं और हमें उम्मीद है कि जल्द से जल्द हमें मदद मिलेगी। होटल और रेस्टोरेंट एसोसिशन से लाखों लोगों का रोजगार जुड़ा हुआ है। सभी के सामने रोजी रोटी का संकट खड़ा हो गया है।

सुमित सूरी के अनुसार संगठन की प्रमुख मांग है कि वर्तमान 20 प्रतिशत की सीमा को बढ़ाकर 50 प्रतिशत किया जाए ताकि व्यवसायों का संचालन सुचारू रूप से हो सके। इसके अलावा उन्होंने एक नया प्रस्ताव भी रखा है कि सभी संस्थानों के लिए आपूर्ति का एक समान नियम नहीं होना चाहिए। होटलों की श्रेणी और उनकी मांग के आधार पर गैस का कोटा निर्धारित किया जाना चाहिए।

रिश्तेदार के घर जा रहा बाइक सवार परिवार हादसे का शिकार, बच्ची की दर्दनाक मौत

इंदौर। इंदौर में ईद पर रिश्तेदार के यहां मिलने जा रहे एक बाइक सवार की टक्कर अज्ञात वाहन से हो गई। बाइक पर युवक के अलावा उसकी बहन और भांजी भी सवार थी। टक्कर से भाई-बहन घायल हो गए, लेकिन चार साल की भांजी की जान नहीं बच सकी। यह घटना बंगाली कॉलोनी चौराहे के समीप हुई। टक्कर किस वाहन ने मारी, यह भी बाइक सवार को पता नहीं है। घटना के बाद लोगों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया था। इलाज के दौरान बच्ची की मौत हो गई। माणिकबाग निवासी सुफियान उनकी बहन और भांजी इकरा के साथ जा रहे थे। वे अपने खजराना में रहने वाले रिश्तेदार के घर के लिए रवाना हुए थे। बंगाली कॉलोनी ब्रिज के पहले रिंग रोड के कट से तेजी से आ रहे वाहन ने टक्कर मार दी और तेजी से निकल गया। संतुलन बिगड़ने से सुफियान की बाइक सड़क पर गिर पड़ी और तीनों को गंभीर चोटें आईं। चार साल की इकरा सिर के बल सड़क पर गिरी और उसे अंदरूनी चोट आई। इसके बाद मौके पर भीड़ जमा हो गई, लेकिन किसी ने भी वाहन को टक्कर मारते हुए नहीं देखा। लोगों ने पुलिस को जानकारी दी। अब पुलिस आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाल कर टक्कर मारने वाले वाहन की जानकारी जुटा रही है। इसी तरह एक अन्य घटना में सिलिकॉन सिटी निवासी पप्पू पिता आशाराम की लसूड़िया में सड़क हादसे में मौत हो गई।

पर्यावरणविदों ने की कान्ह नदी के घाटों की सफाई, शुद्ध जल नर्मदा में किया अर्पित

इंदौर। इंदौर की कान्ह नदी पर पांच सौ करोड़ रुपये से अधिक की राशि बीते 25 वर्षों में अलग-अलग प्रोजेक्टों के माध्यम से खर्च की गई है, लेकिन अभी तक कान्ह नदी शुद्ध नहीं हो पाई है। इंदौर की प्रतिनिधि संस्था अभ्यास मंडल ने इस नदी को शुद्ध बनाने के लिए लंबे समय से अभियान चला रखा है। इसी कड़ी में रविवार को विश्व जल दिवस के मौके पर शहर के पर्यावरणविद और सामाजिक कार्यकर्ता कृष्णपुरा छत्री के घाट पर एकत्र हुए और नदी के घाट की सफाई की। घाट पर चारों तरफ कचरा और गंदगी पड़ी थी। अभ्यास मंडल से जुड़े कार्यकर्ताओं ने पहले घाट साफ किए, फिर पानी से उन्हें धोया। इसके बाद नदी में लोटे से शुद्ध जल प्रवाहित किया। इस मौके पर मंडल से जुड़े पदाधिकारियों ने कहा कि कान्ह नदी को साफ करना आवश्यक है, क्योंकि यह शिप्रा नदी में जाकर मिलती है। यदि कान्ह नदी दूषित होती है तो वह पवित्र शिप्रा नदी को दूषित करेगी। हर बारह वर्षों के बाद उज्जैन में सिंहस्थ मेला लगता है और करोड़ों भक्त सिंहस्थ में शामिल होकर स्नान करते हैं। सकोरे भी वितरित किए कार्यक्रम के दौरान गर्मी में पक्षियों को पानी पिलाने के लिए सकोरे (मिट्टी के बर्तन) का वितरण भी किया गया। इस अवसर पर श्याम सुंदर यादव ने जल संरक्षण और कान्ह-सरस्वती नदी पुनर्जीवित करने की शपथ दिलाई। इस मौके पर दिलीप वाघेला, बसंत सोनी, किशन सोमानी, निर्मल कुमरावत, इशाक चौधरी, संदीप खानवलकर, मनीष भालेराव, यश जायसवाल, सौरभ गौसर, मनीषा गौर, वैशाली खरे, रामेश्वर गुप्ता, मुरली खंडेलवाल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम संचालन मालसिंह ठाकुर ने किया और आभार स्वप्निल व्यास ने माना।

इंदौर के डबलडेकर ब्रिज की 800 टन वजनी बो-स्टिंग को दूसरे सिरे से जोड़ने का काम शुरू

इंदौर। इंदौर के लवकुश चौराहे पर बन रहे प्रदेश के पहले डबल डेकर ब्रिज के मध्य हिस्से का काम अब रफ्तार पकड़ेगा। रविवार रात को ट्रैफिक रोककर 800 टन वजनी बो-स्ट्रिंग को लॉन्च करने की कोशिश की गई। थोड़ा सा हिस्सा खिसकाकर काम रोक दिया गया। इसे लॉन्च करने के लिए ट्रैफिक विभाग ने इंदौर-सांवेर रोड का ट्रैफिक भी डायवर्ट किया था। अब सोमवार को फिर इसके लिए कवायद शुरू की जाएगी। दोनों लेन पर 400-400 टन की बो-स्ट्रिंग लगाई जाएगी। फिर उस पर ट्रैक बनेगा और ट्रैफिक गुजरेगा। यह काम जमीन से 65 मीटर ऊंचाई पर होना है, इसलिए निर्माण एजेंसी ने विशालकाय क्रेनों की मदद ली। सोमवार रात को इंदौर विकास प्राधिकरण के अधिकारी मौके पर पहुंचे। पहले मार्ग का ट्रैफिक रोका गया और दोनों तरफ क्रेनों ने मध्य हिस्से को आगे खिसकाना शुरू कर दिया। दो-तीन मीटर का हिस्सा खिसकाने के बाद काम रोक दिया गया।

इंदौर में 175 करोड़ रुपये की लागत से यह ब्रिज तीन साल पहले बनना शुरू हुआ था। इसकी लंबाई एक किलोमीटर से ज्यादा है। फरवरी में ही इसे पूरा हो जाना था, लेकिन काम की गति धीमी होने से देरी हो रही है। ब्रिज का 85 प्रतिशत काम पूरा हो चुका है और 800 टन वजनी स्टील की बो-स्ट्रिंग चंडीगढ़ से बनकर आई है। अब उसे मध्य हिस्से में रखा जाएगा। मध्य हिस्से में मेट्रो का ट्रैक भी है। इस कारण विशेष सावधानी बरती जा रही है, ताकि कोई परेशानी न हो। मध्य हिस्से के दोनों सिरे जुड़ने के बाद ब्रिज वर्षाकाल से पहले ट्रैफिक के लिए खोला जा सकता है। इसके निर्माण का सबसे ज्यादा फायदा ढाई साल बाद उज्जैन में लगने वाले सिंहस्थ मेले के दौरान होगा। उज्जैन की ओर सबसे ज्यादा ट्रैफिक इंदौर से होकर गुजरेगा।

उच्च गुणवत्ता की चिकित्सा शिक्षा और चिकित्सा सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए बजट की कमी नहीं - उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल की अध्यक्षता में अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय मेडिकल कॉलेज, विदिशा की सामान्य सभा की तीसरी बैठक मंत्रालय में सम्पन्न हुई। बैठक में मेडिकल कॉलेज में चिकित्सा सेवाओं की मजबूती, उच्च गुणवत्ता वाली मेडिकल शिक्षा, और ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने के सम्बंध में विमर्श कर उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने आवश्यक निर्देश दिए। बैठक में उपाध्यक्ष सामान्य सभा एवं पशुपालन मंत्री और प्रभारी मंत्री श्री लखन पटेल, अपर मुख्य सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा, श्री अशोक बर्नवाल, अध्यक्ष कार्यकारिणी समिति श्री मयंक अग्रवाल, संचालक चिकित्सा शिक्षा डॉ. अरुणा कुमार, डीन मेडिकल कॉलेज विदिशा डॉ. मनीष निगम सहित सामान्य सभा के सदस्य एवं विभागीय वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि शासन का लक्ष्य ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच बढ़ाना, उच्च गुणवत्ता वाली मेडिकल शिक्षा देना और विशेषज्ञ चिकित्सकीय सेवाओं का सतत प्रवाह सुनिश्चित करना है। उन्होंने कहा कि इस दिशा में टेलीमेडिसिन जैसी आधुनिक तकनीकों का अधिकतम उपयोग करके ग्रामीण मरीजों को विशेषज्ञों तक पहुंचाने के प्रयास किए जाएँ एवं प्रगति की नियमित समीक्षा की जाये। उन्होंने कहा कि टेलीमेडिसिन के माध्यम से ग्रामीण और सुविधाओं की कमी वाले क्षेत्रों में विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवाएँ आसानी से उपलब्ध कराई जा सकती हैं। इससे मरीजों को समय पर निदान और उपचार मिलता है, अस्पताल आने की दूरी और खर्च कम होते हैं, और स्वास्थ्य सेवाओं का व्यापक कवरेज सुनिश्चित होता है। बताया गया कि शासकीय मेडिकल कॉलेज, विदिशा में बालरोग, स्त्रीरोग एवं प्रसूति, मेडिसिन और सर्जरी विभागों में यह सुविधा लगातार दी जा रही है, जिससे ग्रामीण इलाकों में चिकित्सकीय सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने रिक्त पदों की प्राथमिकता से पूर्ति के निर्देश दिए, ताकि कॉलेज में प्रशासनिक और चिकित्सकीय कार्यों का सुचारु संचालन सुनिश्चित हो सके। इसके साथ ही, पूर्व वित्तीय वर्षों की ऑडिट रिपोर्ट, सामान्य परिषद की द्वितीय बैठक का पालन प्रतिवेदन, और कार्यकारिणी समिति के निर्णयों का अनुमोदन किया गया।

'शौर्य संकल्प योजना' पर लगी कैबिनेट की मुहर, पिछड़ा वर्ग के युवाओं को सुरक्षाबलों में भर्ती के लिए तैयार करेगी योजना

भोपाल। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग युवा अभ्यर्थियों को सुरक्षाबलों में भर्ती के लिए सक्षम बनाने के लिए शौर्य संकल्प प्रशिक्षण योजना-2026 की शुरुआत करने जा रहा है। इसके जरिए युवाओं को गुणवत्तापूर्ण आवासीय प्रशिक्षण दिया जाएगा। जिसमें शारीरिक प्रशिक्षण के साथ-साथ सामान्य ज्ञान, गणित, तर्कशक्ति, कंप्यूटर एवं अंग्रेज़ी जैसे विषयों का सैद्धांतिक प्रशिक्षण भी शामिल होगा।

पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने योजना को कैबिनेट की मंजूरी मिलने पर कहा कि शौर्य संकल्प योजना हमारे युवाओं को केवल रोजगार ही नहीं, बल्कि अनुशासन, आत्मविश्वास और राष्ट्रसेवा की भावना से भी सशक्त बनाएगी। हमारा उद्देश्य है कि प्रदेश का हर युवा अपनी क्षमता के अनुसार देश की सेवा में योगदान दे सके। मध्यप्रदेश सरकार युवाओं को अवसर देने के लिए प्रतिबद्ध है। यह योजना सुरक्षा बलों में भर्ती की तैयारी को सशक्त बनाकर पिछड़ा वर्ग के युवाओं के लिए नए द्वार खोलेगी और उन्हें आत्मनिर्भर बनाएगी।

योजना के प्रारंभिक चरण में 40 प्रशिक्षण केंद्रों के जरिए 4000 युवाओं को ट्रेनिंग दी जाएगी। योजना में महिला और पुरुष अभ्यर्थियों के लिए पृथक-पृथक केंद्र संचालित किए जाएंगे। प्रशिक्षण की अवधि 45 दिन निर्धारित की गई है। चयनित अभ्यर्थियों को निःशुल्क आवास, भोजन एवं अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। साथ ही पुरुष अभ्यर्थियों को 1000 रुपये तथा महिला अभ्यर्थियों को 1100 रुपये प्रतिमाह की दर से छात्रवृत्ति भी दी जाएगी।

जिले में अच्छे कार्य करने वालों को मिलेगा प्रोत्साहन एवं कमजोर प्रदर्शन करने वालों पर होगी कार्रवाई

इंदौर। कलेक्टर श्री शिवम वर्मा की अध्यक्षता में समय-सीमा के पत्रों के निराकरण तथा विभिन्न प्राथमिकता वाले विषयों की समीक्षा हेतु बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में विशेष रूप से राजस्व अभियान की प्रगति की विस्तृत समीक्षा करते हुए निर्देश दिए गए कि जिले में 28 फरवरी तक लंबित सभी प्रकरणों का निराकरण 31 मार्च 2026 तक अनिवार्य रूप से किया जाए। बैठक में इंदौर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी डॉ. परीक्षित झाड़े, अपर कलेक्टर श्रीमती निशा डामोर, अपर आयुक्त नगर निगम श्री आकाश सिंह तथा श्री एन.एन. पाण्डे सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

कलेक्टर श्री वर्मा ने मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार आमजन को समय पर योजनाओं और कार्यक्रमों का लाभ पहुंचाने तथा उनकी समस्याओं का समय पर निराकरण करने के लिए संचालित सीएम हेल्पलाइन, संकल्प से समाधान अभियान एवं अन्य विशेष अभियानों की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को बेहतर प्रदर्शन बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इंदौर जिले की सीएम हेल्पलाइन में परफॉर्मेंस लगातार बेहतर हुई है, जिसे और अधिक सुधारने के प्रयास किए जाएं।

बैठक में चल रहे विशेष राजस्व अभियान की भी समीक्षा की गई। बताया गया कि यह अभियान 13 मार्च से प्रारंभ हुआ है। इस अभियान के तहत 31 मार्च तक विगत 28 फरवरी तक लंबित बंटवारा, सीमांकन, नामांतरण एवं कब्जा विवाद जैसे प्रकरणों का त्वरित निराकरण किया जा रहा है। कलेक्टर श्री वर्मा ने लंबित प्रकरणों को अभियान अवधि में ही निराकृत करने के निर्देश दिए।

बैठक में उन्होंने विद्युत सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए। बैठक में विद्युत सुरक्षा व्यवस्था की समीक्षा करते हुए उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि बिजली के खंभों एवं डीपी पर लगे अनावश्यक तारों और जाल को तत्काल हटाया जाए। साथ ही सभी डीपी एवं तारों की जांच कर आवश्यक सुधार सुनिश्चित किए जाएं, ताकि किसी प्रकार की दुर्घटना की संभावना न रहे। उन्होंने विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में भी विद्युत व्यवस्था दुरुस्त रखने पर जोर दिया, क्योंकि वर्तमान में फसल कटाई के दौरान आग लगने की आशंका बनी रहती है।

बाघ की अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तस्करी करने वाली महिला आरोपी यांगचेन लाचुंगपा की दूसरी जमानत निरस्त

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में प्रदेश में वन एवं वन्यजीव संरक्षण के अनूठे प्रयास किये जा रहे है। वन्य जीव अपराधों से जुड़े तस्करों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा रही है.

इस दिशा में कार्यवाही करते हुए स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स, मध्यप्रदेश एवं वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरों नई दिल्ली ने 10 साल से फरार, अंतरर्राष्ट्रीय बाघ तस्कर यांगचेन लाचुंगपा को, अंततः दिनांक 02.12.2025 को भारत-चीन की अंतर्राष्ट्रीय सीमा के पास लाचुंग, मंगन, जिला उत्तर सिक्किम (सिक्किम) में कई महीनों की कड़ी मेहनत के बाद गिरफ्तार किया था।

जुलाई 2015 में सतपुडा टाइगर रिजर्व नर्मदापुरम में बाघ एवं पेंगोलिन के अवैध शिकार और बाघ की हड्डियों व पेंगोलिन के स्केल की नेपाल के रास्ते चीन में अवैध तस्करी करने वाले गिरोह के विरूद्ध प्रकरण 2015 में दर्ज किया था जिसमें यांगचेन लाचुंगपा वांछित थी। प्रकरण की गंभीरता के कारण वन मुख्यालय ने इसे स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स (एसटीएसएफ) को विवेचना के लिए सौंप दिया था।

एसटीएसएफ ने एक संगठित एवं अंतराष्ट्रीय गिरोह का पर्दाफाश किया जिसमें अभी तक कुल 31 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। यांगचेन लाचुंगपा अंतर्राष्ट्रीय बाघ तस्करी गिरोह की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। जिसका नेटवर्क भारत, भूटान, और चीन तक फैला हुआ है।

यांगचेन लाचुंगपा के गिरोह के कई देशों में फैले नेटवर्क को देखते हुए भारत सरकार के अनुरोध पर इंटरपोल के द्वारा यांगचेन लाचुंगपा के विरूद्ध रेड नोटिस भी जारी किया गया है यांगचेन लाचुंगपा मूल रूप से चीन के स्वायत्त क्षेत्र तिब्बत की निवासी है एवं भारत में मुख्यतः दिल्ली एवं सिक्किम राज्यों में रहती है।

यांगचेन के सर्व प्रथम वर्ष सितम्बर 2017 में भी पकड़ा कर ट्रांजिट रिमांड के लिये पेश किया गया था परन्तु न्यायालय से अंतरित जमानत मिलने के बाद फरार हो गई। उसकी अग्रिम जमानत को मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय जबलपुर ने भी वर्ष 2019 में खारिज कर दिया था।

प्रकरण में शामिल आरोपी यांगचेन लाचुंगपा द्वारा प्रथम अपर सेशन न्यायालय नर्मदापुरम मध्यप्रदेश में दूसरी जमानत याचिका दायर की जिसे अपर सेशन न्यायालय नर्मदापुरम द्वारा स्टेट टाइगर स्ट्राइक फोर्स भोपाल द्वारा की गई विवेचना एवं अभियोजन पक्ष द्वारा दी गई दलीलो व आरोपी की वन्यप्राणियों के तस्करी के अंतर्राष्ट्रीय गिरोह से संबंधित होकर अत्यंत गंभीर एवं संवेदनशील प्रकृति के आधार पर निरस्त की गई।

आईपीएल 2026 से बाहर हो जाएंगे मिचेल स्टार्क? ताजा अपडेट ने बढ़ाई दिल्ली कैपिटल्स की टेंशन

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2026 से पहले सभी टीमों के लिए स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। कई खिलाड़ी चोट की वजह से बाहर हो चुके हैं, जबकि कुछ सीजन के शुरूआती मैचों में नहीं खेल पाएंगे। इसी कड़ी में दिल्ली कैपिटल्स के लिए ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क की उपलब्धता को लेकर अब तक स्पष्ट जानकारी नहीं है। दिल्ली के कोच हेमंग बदानी ने स्टार्क को लेकर ताजा अपडेट दिया है।

बदानी का कहना है कि स्टार्क को लेकर कुछ भी अब तक स्पष्ट नहीं है। दिल्ली के कोच ने बताया कि स्टार्क को अब तक क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया की तरफ से एनओसी नहीं मिली है। तो वहीं कप्तान अक्षर पटेल को भरोसा है कि ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाज जल्द ही टीम के साथ जुड़ेंगे। बता दें कि ऑस्ट्रेलिया के स्टार्क, पैट कमिंस और जोश हेजलवुड तीनों ही अब तक अपनी-अपनी टीमों के साथ नहीं जुड़े हैं।

हेमंग बदानी ने दिया अपडेट- बदानी ने मीडिया से बात करते हुए कहा, क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया से मिचेल स्टार्क के बारे में कोई अपडेट नहीं मिला है। जैसे ही स्थिति स्पष्ट होती है, सारी चीजें सामने आ जाएंगी। दिल्ली के कोच की इन बातों से साफ है कि बाएं हाथ के तेज गेंदबाज को लेकर अब तक कुछ भी स्पष्ट नहीं है। आईपीएल 2026 की शुरूआत 28 मार्च से होने वाली है। अगर स्टार्क को जल्द एनओसी नहीं मिलती है, तो शायद पहले कुछ मैचों में न खेल पाएं।

स्टार्क को लेकर बात करते हुए अक्षर ने कहा, स्टार्क कभी भी आ सकते हैं और इसके लिए कोई एक निश्चित तारीख सामने नहीं आई है। अगर वे नहीं आते हैं, तो उनकी जगह किसी दूसरे गेंदबाज को शामिल नहीं किया जाएगा। नटराजन हमारी टीम में हैं, फिट हैं और अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। अगर जरूरत पड़ी, तो स्टार्क और इम्पैक्ट प्लेयर के बारे में बात की जा सकती है।

वैभव सूर्यवंशी कभी प्रोफेशनल नहीं बन पाएगा..., RCB के स्टार खिलाड़ी का चौंकाने वाला बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। वैभव सूर्यवंशी, एक ऐसा नाम, जिसने बेहद ही कम उम्र में, कम समय में जो अपनी बैटिंग से जलवा बिखेरकर हर किसी के दिलों में अपनी जगह बनाई। विश्व क्रिकेट में वैभव की बैटिंग की तुलना क्रिस गेल से होने लगी है। यहीं, नहीं हाल ही में एक कार्यक्रम के दौरान वैभव ने गेल के 175 रन के रिकॉर्ड को तोड़ने का भी जिक्र किया था।

अब आईपीएल के 19वें सीजन से पहले हर किसी की नजरें वैभव पर बनी हुई है, जिन्होंने पिछले सीजन में धमाकेदार बैटिंग कर विश्व क्रिकेट को हैरत में डाल दिया था। ऐसे में इस बार वैभव कैसा परफॉर्म करेंगे ये देखने लायक होगा। इस बीच टूर्नामेंट से पहले आरसीबी के स्टार जितेश शर्मा ने वैभव के फ्यूचर को लेकर चौंकाने वाला बयान दिया। उनका मानना है कि ये युवा खिलाड़ी अपने करियर में कभी भी प्रोफेशनल नहीं बन पाएगा। जितेश का ये बयान तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। दरअसल, एबी डिविलियर्स के यूट्यूब चैनल पर बातचीत में जितेश शर्मा ने वैभव सूर्यवंशी को लेकर बात कही।इस दौरान जितेश के साथ बातचीत के दौरान साउथ अफ्रीका के पूर्व कप्तान एबी डिविलियर्स ने वैभव की मैच्योरिटी और प्रोफेशनलिज्म की तारीफ की। उन्होंने कहा कि इतनी कम उम्र में जिस तरह वैभव ने अपने खेल को संभाला है, वह काबिल-ए-तारीफ है।

दिल को रखना है चुस्त-दुरुस्त, तो इन तरह के फूड्स से आज ही बना लें दूरी

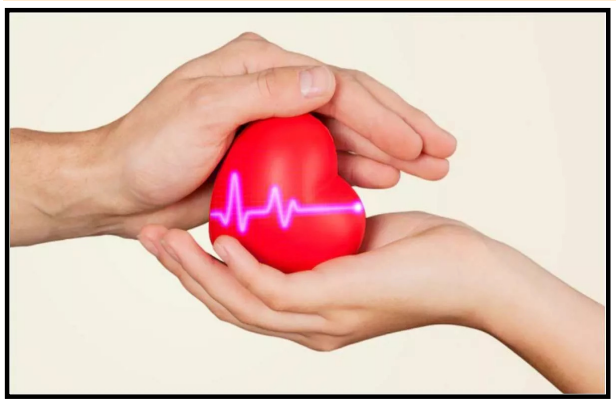

तला हुआ खाना- कई शोध से पता चला है कि सैचुरेटेड फैट्स शरीर में खराब कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को बढ़ाने का काम करते हैं। तले हुए खाने या फिर प्रोसेस्ड फूड्स में नमक और सैचुरेटेड फैट्स की मात्रा काफी ज़्यादा होती है। दोनों दिल की सेहत पर काफी बुरा असर डालते हैं।

रेड मीट, फ्रेंच फाइज़, सैंडविच, बर्गर आदि जैसे फूड्स शुरुआती बैड कोलेस्ट्रॉल का स्तर बढ़ाते हैं, जिससे स्ट्रोक और दिल के दौरे का खतरा बढ़ जाता है।

चीनी युक्त सोडा या फिर केक- चीनी को मीठा ज़हर किसी वजह से ही कहा जाता है। केक, मफिन, कुकीज़ और मीठी ड्रिंक्स शरीर में सूजन का कारण बनते हैं। चीनी का ज़्यादा सेवन शरीर में फैट्स बढ़ाता है, जिससे डायबिटीज़, हार्ट अटैक और स्ट्रोक का खतरा बढ़ता है।

लाल मांस- रेड मीट यानी मटन मांसाहारी लोगों के बीच काफी पॉपुलर होता है। हालांकि, यह सैचुरेटेड फैट्स से भरपूर होता है, जिसकी वजह से धमनियों में प्लाक जम सकता है। जो लोगों को मटन खाने का शौक है, उन्हें वह हिस्सा खाना चाहिए जिसमें ज़्यादा प्रोटीन और कम फैट हो।

अगर आप चिकन खा रहे हैं तो ब्रेस्ट, विंग्ज़ वाला हिस्सा में ज़्यादा प्रोटीन होता है और कम फैट। वहीं, मछली सबसे हेल्दी और अच्छा ऑप्शन है।

सफेद चावल, ब्रेड या फिर पास्ता- सफेद ब्रेड, मैदे, चीनी और प्रोसेस्ड तेल को मिलाकर तैयार की जाती है, जिसमें किसी भी तरह के फायदे नहीं होते हैं। ऐसा है सफेद पास्ता के साथ भी है। वहीं, सफेद चावल की बात करें, तो इसमें फाइबर की मात्रा कम होती है, इसलिए दिल की सेहत के लिए इसका ज़्यादा सेवन नहीं किया जाना चाहिए। चावल को अगर दाल या सब्ज़ी के साथ खाया जा रहा है, तो इसमें पोषण की मात्रा अच्छी हो जाती है, लेकिन फिर भी चावल की मात्रा को सीमित ही रखना

जानिक सिनर ने जीत के साथ शुरू किया खिताबी अभियान, दामिर डज़ुमहुर को दी करारी मात

नई दिल्ली (एजेंसी)। विश्व नंबर दो जानिक सिनर ने मियामी ओपन में दमदार जीत के साथ अपने खिताबी अभियान की शुरुआत की। उन्होंने पहले दौर में दामिर डजुमहुर को आसानी से हरा दिया। शनिवार रात खेले गए मुकाबले में हाल ही में इंडियन वेल्स ओपन का खिताब जीतने वाले सिनर ने दामिर को 6-3, 6-3 से पराजित किया।

कैलेंडर वर्ष का अपना पहला खिताब जीतने के छह दिन बाद विश्व नंबर दो सिनर ने एटीपी मास्टर्स 1000 स्तर के टूर्नामेंटों में लगातार जीते गए सेटों के मामले में सर्बियाई दिग्गज नोवाक जोकोविक की बराबरी कर ली। दोनों के नाम 24 लगातार सेट जीतने का रिकार्ड है। सिनर इस श्रेणी के टूर्नामेंटों में 12 मैचों की जीत की लय में हैं, जिसमें पिछले नवंबर में पेरिस और इसके बाद कैलिफोर्निया के इंडियन वेल्स में खिताबी जीत शामिल है।

सिनर का अगला मुकाबला- सिनर का अगला मुकाबला 30वीं वरीयता प्राप्त कोरेंटिन माउटे से होगा, जिन्होंने टामस माखाच को 6-0, 1-6, 6-4 से हराया। सिनर ने एटीपी मास्टर्स 1000 में लगातार सीधे सेटों में जीत के अपने सिलसिले पर कहा कि मेरे लिए कभी-कभी स्कोरबोर्ड मायने रखता है। मैं एक खिलाड़ी के रूप में बेहतर बनने की कोशिश करता हूं और खुद को ज्यादा से ज्यादा मैच खेलने की स्थिति में रखना चाहता हूं। मैं हर प्रतिद्वंद्वी को एक ही तरीके से लेता हूं, कोर्ट पर उतरकर सर्वश्रेष्ठ देने और सकारात्मक रवैये के साथ खेलने की कोशिश करता हूं।

जीत के साथ गफ चौथे दौर में- कोको गफ ने हमवतन एलिसिया पार्क्स को तीन सेटों में हराकर शानदार वापसी करते हुए मियामी ओपन के राउंड ऑफ-16 में जगह बना ली। शुरुआती संघर्ष के बावजूद गफ ने मैच पर पकड़ बनाई और कई ब्रेक प्वाइंट बचाए। यह मियामी में अंतिम 16 में उनकी चौथी एंट्री है, जबकि 22 वर्षीय खिलाड़ी इस डब्ल्यूटीए 1000 टूर्नामेंट में अपने पहले क्वार्टर फाइनल की तलाश में हैं। गफ ने शुरुआती ब्रेक के साथ 2-0 की बढ़त बनाई, लेकिन पार्क्स ने लगातार छह गेम जीतकर पहला सेट 6-2 से अपने नाम कर लिया। इसके बाद गफ ने मैच पर पूरी तरह नियंत्रण कर लिया और अगले 13 में से 12 गेम जीतते हुए एक घंटा 50 मिनट में 2-6, 6-0, 6-1 से जीत दर्ज की। 2025 सत्र की शुरुआत से पहला सेट गंवाने के बाद डब्ल्यूटीए स्तर पर यह गफ की 11वीं जीत है।

शरीर में दिखें ये लक्षण तो हो जाएं सतर्क, किडनी की परेशानी के होते हैं

किडनी की बीमारी के कई शारीरिक लक्षण होते हैं, लेकिन कभी-कभी लोग उन्हें अनदेखा कर देते हैं।इसलिए, व्यक्ति को इन लक्षणों के प्रति सतर्क रहना चाहिए और बिना किसी देरी के डॉक्टर से संपर्क करना चाहिए। दिल की बीमारी की तरह ही किडनी की सेहत पर भी उतना ही ध्यान देने की जरूरत होती है। यहां कुछ लक्षण हैं जो किडनी की परेशानी से जुड़े हैं, देखिए-

एड़ी, पैरों या तलवों में सूजन- किडनी की कार्यक्षमता कम होने से सोडियम प्रतिधारण होता है जिससे आपके पैरों, चेहरे और एड़ी में सूजन हो सकती है।

पेरिओरिबिटल एडिमा- यह कोशिकाओं में तरल पदार्थ के निर्माण के कारण आंखों के आसपास सूजन है। कई अन्य कारणों के अलावा, यह किडनी की बीमारी के लक्षण के रूप में भी विकसित हो सकता है। आंखों के आसपास सूजन इस बात का संकेत हो सकती है कि आपकी किडनी शरीर में रखने के बजाय मूत्र में बड़ी मात्रा में प्रोटीन का रिसाव कर रही हैं।

कमजोरी, थकान, भूख में कमी- आप सामान्य दिनों की तुलना में ज्यादा थकान महसूस कर सकते हैं। यह काफी हद तक ब्लड में टॉक्सिन और अशुद्धियों के निर्माण के कारण होता है, जो किडनी के खराब काम के परिणामस्वरूप होता है।

हीमोग्लोबिन का स्तर गिरना- किडनी की बीमारी की सामान्य परेशानियों में से एक एनीमिया भी है। इससे कमजोरी और थकान हो सकती है।

यूरिन की कमी- किडनी की परेशानी होने पर यूरिन उत्पादन कम हो सकता है या आपको ज्यादा बार पेशाब करने की जरूरत महसूस हो सकती है, खासकर रात में। यह एक चेतावनी संकेत हो सकता है क्योंकि यह इंगित करता है कि किडनी के फिल्टर क्षतिग्रस्त हो गए हैं। कभी-कभी यह पुरुषों में कुछ मूत्र संक्रमण या बढ़े हुए प्रोस्टेट का संकेत भी हो सकता है।

यूरिन में झाग या- पेशाब में ज्यादा झाग आना प्रोटीन होने की ओर इशारा करता है। कभी-कभी जब किडनी के फिल्टर खराब हो जाते हैं, तो ब्लड कोशिकाएं यूरिन में रिसने लगती हैं। इसके साथ बुखार या ठंड लगने के साथ पेशाब से जुड़ा मवाद गंभीर हो सकता है।

सूखी और खुजली वाली त्वचा-हेल्दी किडनी आपके शरीर से अपशिष्ट और अतिरिक्त तरल पदार्थ को हटाते हैं, और रेड ब्लड सेल्स को बनाने में मदद करते हैं जो हड्डियों को मजबूत रखने के अलावा आपके ब्लड में मिनरल की सही मात्रा को बनाए रखते हैं।

आईपीएल टीम स्पॉन्सरशिप ने पार किया 1000 करोड़ का आंकड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल आज के दौर में सिर्फ एक क्रिकेट लीग नहीं, बल्कि एक बड़ा बिजनेस मॉडल बन चुका है। 2025 की एक रिपोर्ट के मुताबिक, आईपीएल टीमों की स्पॉन्सरशिप से कमाई 1000 करोड़ रुपये से पार की आंकी गई है। इससे ये समझ आता है कि कंपनियां अब क्रिकेट को अपने ब्रांड के प्रचार के लिए सबसे बेस्ट जरिया मान रही हैं।

आईपीएल में पहले फैंटेसी गेमिंग कंपनियों का दबदबा था, लेकिन अब नियमों में बदलाव के बाद कई नए सेक्टर जुड़ गए हैं। टेक्नोलॉजी, एविएशन, फिनटेक और ग्रीन एनर्जी जैसी कंपनियां भी आईपीएल टीमों को स्पॉन्सर कर रही हैं। इससे लीग की कमाई और ज्यादा हो रही है।

इसके अलावा, अब कई इंटरनेशनल ब्रांड्स भी आईपीएल से जुड़ रहे हैं, जिससे लीग की पहचान भारत के बाहर भी बढ़ रही है।

आईपीएल की सभी टीमों बराबर की कमाई नहीं कर पाती है। कुछ टीमें जो स्पॉन्सरशिप में सबसे आगे हैं वो- मुंबई इंडियंस, आरसीबी, सीएसके है। ये तीनों टीमें हर साल करीब 150 करोड़ रुपये तक की स्पॉन्सरशिप कमाती हैं। इनके बाद केकेआर, गुजरात टाइटंस दूसरे स्थान पर आते हैं, जबकि बाकी टीमें मिलकर कुल आंकड़े को 1000 करोड़ रुपये के पार ले जाती हैं।

तुरंत वापस ले लो नाम..., PSL 2026 पर मंडराया खतरा; वॉर्नर-स्मिथ समेत इन विदेशी खिलाड़ियों को मिली धमकी

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान सुपर लीग 2026 शुरू होने से पहले ही टूर्नामेंट पर संकट के बादल मंडराने लगे है। पीसीबी ने पहले ही पीएसएल के आयोजन को बिना दर्शकों के कराने का फैसला किया है।

वहीं, रिपोर्ट्स के मुताबिक, पाकिस्तान के एक सशस्त्र संगठन जमात-उल-अहरार ने विदेशी खिलाड़ियों को पाकिस्तान सुपर लीग में हिस्सा न लेने की चेतावनी दी है। इस लिस्ट में डेविड वॉर्नर, स्टीव स्मिथ और डेरिल मिचेल जैसे बड़े नाम शामिल हैं।

रिपोर्ट के अनुसार, जमात-उल-अहरार नाम के एक सशस्त्र समूह ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटरों जैसे डेविड वॉर्नर, स्टीव स्मिथ और डेरिल मिचेल को ये वॉर्निंग दी है कि वे पाकिस्तान आकर PSL में हिस्सा न लें।

इस संगठन का कहना है कि मौजूदा सुरक्षा हालात अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट के लिए सुरक्षित नहीं हैं। उन्होंने साफ शब्दों में कहा है कि अगर खिलाड़ी पाकिस्तान आते हैं, तो उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी उनकी नहीं होगी।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, विदेशी खिलाड़ियों को टूर्नामेंट से हटने की सलाह दी गई है। ये भी कहा गया है कि इस धमकी को नजरअंदाज करने पर गंभीर परिणाम भुगतना पड़ सकता है। यहां तक कहा गया कि मैचों को रद्द करने की कोशिश की जा सकती है।

इन सबका असर पीएसएल पर पड़ेगा, जहां पहले ही पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने ये कहा कि पीएसएल 2026 को सीमित शहरों में और बंद दरवाजों के पीछे आयोजित किया जाएगा।

इसके पीछे पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्ष और बढ़ती ईंधन कीमतों को कारण बताया गया था। हालांकि, अब इन धमकियों के बाद PCB के सामने सुरक्षा सुनिश्चित करने की बड़ी चुनौती खड़ी हो गई है।

PSL 2026 की शुरुआत 26 मार्च से होनी है, लेकिन इन धमकियों के बाद सबकी नजरें विदेशी खिलाड़ियों के फैसले पर टिकी है। अगर हालात नहीं सुधरे, तो टूर्नामेंट के आयोजन पर असर पड़ सकता है और कई खिलाड़ियों को इस लीग से अपना नाम वापस लेते हुए देखा जा सकता है।

अमरूद की पत्तियों के इस्तेमाल से दूर हो सकती हैं त्वचा की ये परेशानियां

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमरूद खाने से सेहत को बहुत फायदे मिलते हैं, ये तो आप जानते होंगे। लेकिन क्या आप जानते हैंस अमरूद की पत्तियां भी काफी गुणकारी होती हैं, ये सेहत और सुंदरता दोनों के लिए लाभकारी हैं।

दाग-धब्बों को कम करने में सहायक
त्वचा को साफ करने में मददगार
ड्राई स्किन की समस्या में कारगर
त्वचा की झुर्रियों को कम करमे में सहायक
कील-मुंहासों से राहत दिलाने में कारगर

ब्लड शुगर कंट्रोल रखने के लिए डायबिटीज के मरीज अपनाएं ये आसान घरेलू नुस्खे

नई दिल्ली (एजेंसी)। अनियमित जीवनशैली और खानपान की गलत आदतों की वजह से होने वाली बीमारियों में डायबिटीज भी एक है। जल्दी थकान महसूस होना, अचानक वजन बढ़ना या घटना, भूख-प्यार ज्यादा लगना, बार-बार यूरिन आना, थोड़ी-थोड़ी देर में मुंह सूखना, धुंधला दिखना, व्यवहार में चिड़चिड़ापन आदि इसके प्रमुख लक्षण हैं। अगर आप इससे जूझ रहे हैं, तो यहां दिए गए घरेलू उपचार आपके लिए मददगार साबित हो सकते हैं।

- हफ्ते में तीन दिन यानी हर दूसरे दिन एक करेले के रस में आधा नींबू, चुटकीभर काली मिर्च और स्वादानुसार नमक मिलाकर पीने से डायबिटीज से राहत मिलती है।

- हफ्ते में दो बार एक ग्लास गुनगुने पानी में आधा टीस्पून दालचीनी पाउडर मिलाकर पीने से डायबिटीज में आराम पहुंचता है।

- नियमित खाना खाने के बाद सौंफ खाने से डायबिटीज कंट्रोल में रहती है।

- डायबिटीज होने पर शलजम का सैलेड खाना भी फायदेमंद होता है।

- सुबह खाली पेट गुनगुने पानी के साथ आधा टीस्पून अलसी के बीजों का पाउडर लेने से शुगर से राहत मिलती है।

- रातभर पानी में भीगे मेथी के दानों को सुबह चबा-चबाकर खाने और बचे हुए पानी को पीने से डायबिटीज परेशान नहीं करती।

- रातभर पानी में भीगे बादाम सुबह छीलकर खाने से डायबिटीज में फायदा पहुंचता है।

- रोज सुबह आधा कप व्हीट ग्रास का ताजा जूस पीने से डायबिटीज से राहत मिलती है।

- डायबिटीज होने पर जामुन पर नमक लगाकर खाने से आराम पहुंचता है। गुनगुने पानी के साथ जामुन की गुठली का पाउडर लेने से भी राहत मिलती है।

- दिन में दो बार 10 मिलीग्राम आंवले के रस में चुटकीभर हल्दी पाउडर मिलाकर लेने से डायबिटीज परेशान नहीं करती।

- सहजन के पत्तों के सेवन से डायबिटीज के रोगियों को लाभ होता है।

आंखों पर ड्राईनेस से निपटने के लिए अपनाएं ये तरीके, चुटकियों में गायब होगी परेशानी

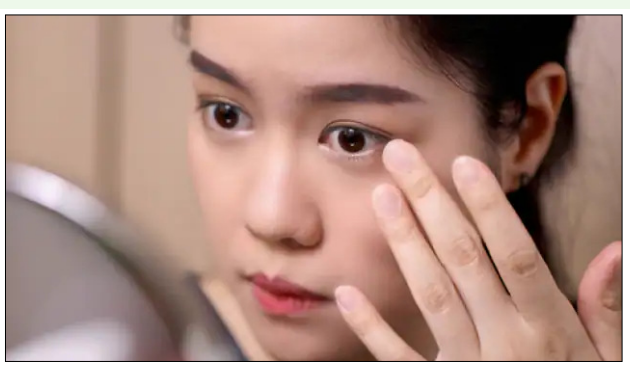

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्किन पर ड्राईनेस कई वजहों से आ सकती है जिनमें से कुछ मौसम और गर्म पानी के कारण होती हैं। कई लोगों को आंखें के आसपास और पलकों पर रूखेपन की समस्या हो सकती है। पलकों की स्किन आपके शरीर पर सबसे पतली होती है, ऐसे में यहां आसानी से सूजन हो जाती है। अगर आप अपनी पलकों पर रूखी त्वचा देखते हैं, तो संभव है कि आपको उन्हें मॉइस्चराइज करने की जरूरत है। इस परेशान करने वाली समस्या को कम करने के लिए इन तरीकों को अजमां सकते हैं।

पेट्रोलियम जेली- अगर आपकी आंखों के आसपास के क्षेत्र में सूखापन हो रहा है तो पेट्रोलियम जेली की थोड़ी मात्रा लगाएं। हालांकि, आंखों के अंदरूनी कोनों में इसे लगाने से बचें। अपनी सूखी और पपड़ीदार पलकों पर पेट्रोलियम जेली का इस्तेमाल करने से हाईड्रेशन में मदद मिलेगी।

चिड़चिड़े पदार्थों से बचें- अगर सूखी आंखें एलर्जी की प्रतिक्रिया के कारण होती हैं, तो आपको कुछ चीजों को लगाने से बचना चाहिए। केवल अपने प्रोडक्ट के बारे में ही नहीं बल्कि अपने आस-पास की चीजों के बारे में भी सोचना जरूरी है। अपनी उत्तेजना का स्रोत निर्धारित करें ये कुछ भी हो सकता है जैसे नया डिटर्जेंट या इत्र? पता लगते हैं इससे दूरी बनाएं।

आंखें मलने से बचें- अपनी सूखी, खुजली वाली स्किन को खरोंचने से बचें। इससे स्थिति बढ़ सकती है। सूजन को दूर करने के लिए, एंटी-खुजली क्रीम या गर्म-ठंडा सेक लगाएं।

गुनगुने पानी से धोएं- आंखों के क्षेत्र पर विशेष ध्यान देते हुए हर दिन अपना चेहरा धोएं। गुनगुने पानी से आपके चेहरे से सभी गंदगी, तेल और जलन को दूर करने में मदद करेगा।

सरकार ने बांट दिए 10.56 करोड़ एलपीजी कनेक्शन, सब्सिडी भी जारी

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई) के लागू होने के बाद देश में एलपीजी की पहुंच लगभग हर घर तक हो गई है। 1 मार्च 2026 तक देश भर में करीब 10.56 करोड़ पीएमयूवाई कनेक्शन दिए जा चुके हैं, जिनमें महाराष्ट्र में 52.60 लाख और गुजरात में 43.92 लाख कनेक्शन शामिल हैं। यह जानकारी सोमवार को संसद में दी गई। सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान 25 लाख अतिरिक्त एलपीजी कनेक्शन जारी करने की मंजूरी भी दी है, ताकि लंबित आवेदनों को पूरा किया जा सके और देश में एलपीजी की पहुंच पूरी तरह सुनिश्चित की जा सके।

किस राज्य को कितने नए कनेक्शन- पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस राज्य मंत्री सुरेश गोपी ने राज्यसभा में लिखित जवाब में बताया कि इस विस्तार के तहत 1 मार्च 2026 तक महाराष्ट्र में लगभग 0.48 लाख और गुजरात में करीब 0.87 लाख नए कनेक्शन दिए गए हैं।

पीएमयूवाई शुरू होने से पहले देश में एलपीजी कवरेज लगभग 62 प्रतिशत थी, जो अब काफी बढ़ चुकी है। इसके साथ ही लाभार्थियों द्वारा एलपीजी के इस्तेमाल में भी बढ़ोतरी हुई है। 2021-22 में जहां औसतन 3.68 सिलेंडर सालाना उपयोग किए जाते थे, वहीं 2025-26 में यह बढ़कर 4.80 सिलेंडर हो गया है।

घरेलू एलपीजी की सप्लाई व्यवस्था हुई बेहतर - ऑयल मार्केटिंग कंपनियों (ओएमसी) ने घरेलू एलपीजी की सप्लाई व्यवस्था को भी काफी बेहतर किया है। गोपी ने कहा, 1 मार्च 2026 तक देश में कुल 25,605 एलपीजी डिस्ट्रीब्यूटर हैं, जिनमें से 17,677 ग्रामीण क्षेत्रों में हैं, जिनकी सप्लाई के लिए 214 एलपीजी बॉटलिंग प्लांट काम कर रहे हैं।

ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में एलपीजी की पहुंच बढ़ाने के लिए अप्रैल 2016 से फरवरी 2026 के बीच 8,037 नए डिस्ट्रीब्यूटर शुरू किए गए, जिनमें से 93 प्रतिशत यानी 7,444 ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। मंत्री के अनुसार, सरकार पीएमयूवाई उपभोक्ताओं के लिए एलपीजी को सस्ता बनाने के लिए भी कदम उठा रही है।

वित्त वर्ष 2025-26 में सरकार 14.2 किलोग्राम के सिलेंडर पर 300 रुपए तक की सब्सिडी (और 5 किलो वाले सिलेंडर के लिए भी अनुपातिक रूप से) दे रही है, जो अधिकतम 9 रिफिल तक लागू है। इसके अलावा, सक्षम नामक पहल के जरिए ऑयल कंपनियां (पीएसयू) ऊर्जा बचत और टिकाऊ विकास को बढ़ावा देने के लिए लोगों को जागरूक कर रही हैं।

पाकिस्तान में लश्कर कमांडर बिलाल की हत्या, घरवालों ने ही उतारा मौत के घाट

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान से एक चौंकाने वाली खबर सामने आई है। यहां प्रतिबंधित आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के कमांडर बिलाल आरिफ सराफी की उसके ही परिवार के सदस्यों ने हत्या कर दी।

यह घटना शनिवार को ईद की नमाज के बाद लाहौर के पास मुरीदके में हुई। रिपोर्टों के अनुसार, बिलाल पर पहले चाकू से हमला किया गया और फिर उसे गोली मार दी गई।

पारिवारिक विवाद के चलते हुई वारदात- मीडिया रिपो?र्ट्स के अनुसार, इस हत्या के पीछे का मुख्य कारण पारिवारिक विवाद बताया जा रहा है। वारदात मुरीदके में लश्कर के ध्वस्त मुख्यालय के पास हुई, जिस पर भारतीय सेना ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमला किया था।

पुलिस ने इस मामले में संलिप्त परिवार के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया है। इंटरनेट मीडिया पर कुछ वीडियो भी बहु-प्रसारित हुए हैं जिनमें बिलाल का शव जमीन पर पड़ा दिखाई दे रहा है, हालांकि उनकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।

आतंकी नेटवर्क में बिलाल की भूमिका बिलाल आरिफ सराफी साल 2005 से लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा था। वह मुरीदके केंद्र में युवाओं की भर्ती करने और उन्हें वैचारिक प्रशिक्षण (ब्रेनवाश करने) देने का मुख्य जिम्मा संभालता था।

इसके अलावा, वह संगठन के लिए धन जुटाने और हथियारों की खरीद-फरोख्त में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। बिलाल अन्य वरिष्ठ कमांडरों के साथ तैयबा कालोनी में रहता था। विशेष रूप से, वह भारत में किसी मामले में वांछित नहीं था।

होर्मुज जलडमरूमध्य- सैन्य कार्रवाई से इसे खोलना दुनिया के लिए बड़ा जोखिम क्यों?

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका और ईरान के बीच युद्ध चौथे सप्ताह में प्रवेश कर चुका है, जिसके केंद्र में होर्मुज जलडमरूमध्य है। दुनिया के कुल तेल व्यापार का एक बड़ा हिस्सा इसी संकरे रास्ते से गुजरता है। वर्तमान में यह जलमार्ग लगभग ठप है, जिससे वैश्विक ऊर्जा बाजार में ईंधन की कीमतें आसमान छू रही हैं।

राष्ट्रपति डोनल्ड ट्रंप ने इसे 48 घंटों में पूरी तरह खोलने का अल्टीमेटम दिया है, लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि सैन्य बल से इसे खोलना एक आर्थिक और राजनीतिक बारूद के ढेर पर बैठने जैसा है। ईरान की जवाबी चेतावनी व सैन्य जटिलताएं वॉशिंगटन के लिए इस जलमार्ग को खोलना अब केवल सैन्य लक्ष्य नहीं, बल्कि एक मजबूरी बन गया है।

न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार, ट्रंप प्रशासन हवाई हमलों, समुद्री सुरंगों को हटाने और टैंकरों को सुरक्षा घेरे में निकालने जैसे विकल्पों पर विचार कर रहा है। हालांकि, ईरान ने कड़ी चेतावनी दी है कि यदि उसके बिजली संयंत्रों पर हमला हुआ, तो वह पूरे पश्चिम एशिया में अमेरिकी हितों से जुड़े ऊर्जा, सूचना प्रौद्योगिकी और वॉटर डिसेलिनेशन (जल-शोधन) बुनियादी ढांचे को निशाना बनाएगा। यह स्थिति एक क्षेत्रीय महायुद्ध को जन्म दे सकती है।

अमेरिकी युद्धक विमानों ने ईरान के दक्षिणी तट पर मिसाइल लांचरों और ड्रोन केंद्रों को निशाना बनाया है, लेकिन ईरान की मारक क्षमता पूरी तरह खत्म नहीं हुई है। सबसे बड़ी चुनौती स्वार्म टैक्टिक्स है, जिसमें ईरान की रिवोल्यूशनरी गार्ड की सैकड़ों छोटी और तेज रफ्तार नावें अचानक हमला कर सुरक्षा घेरे को ध्वस्त कर सकती हैं।

समुद्री सुरंगें और खार्ग द्वीप का जोखिम- सैन्य विशेषज्ञों के अनुसार, सबसे घातक समस्या समुद्री सुरंगें हैं। यदि ईरान ने जलडमरूमध्य में बारूदी सुरंगें बिछाई हैं, तो उन्हें साफ करने में हफ्तों लग सकते हैं। एक भी सफल विस्फोट पूरे व्यापारिक यातायात को अनिश्चित काल के लिए रोक सकता है। इसके अलावा, ईरान के मुख्य तेल निर्यात केंद्र खार्ग द्वीप पर कब्जा करने का विकल्प भी मेज पर है। लेकिन इस तरह के जमीनी हमले में हजारों अमेरिकी नौसैनिकों की जान जोखिम में पड़ सकती है और अमेरिका इस संघर्ष में और गहराई तक फंस सकता है।

1980 के दशक के टैंकर युद्ध का अनुभव बताता है कि अमेरिकी सुरक्षा के बावजूद जहाजों को मिसाइलों और बारूदी सुरंगों से बचाना बेहद कठिन है। अंतत- होमुर्ज को जबरदस्ती खोलना एक ऐसी सैन्य उलझन है जिसका कोई आसान समाधान नहीं दिखता।

ETF ने अब तक दिया 160% से ज्यादा का रिटर्न

नई दिल्ली (एजेंसी)। सोना और चांदी ने जब से जबरदस्त रिटर्न देना शुरू किया तब से ही लोगों का ध्यान सोना-चांदी की ओर बढ़ गया। निवेशक धीरे-धीरे शेयर्स के साथ गोल्ड-सिल्वर ईटीएफ के जरिए भी ट्रेड करने लगे। यहीं कारण है कि सोने और चांदी में अब एक दिन में इतनी गिरावट या तेजी आती है। मसलन सोने और चांदी में होने वाली गिरावट या तेजी हजारों में दर्ज की जाती है।

जबकि पहले सोने-चांदी में 1000-2000 रुपये की गिरावट या तेजी को भी बहुत बड़ा माना जाता था। भारत में अब लोग गोल्ड और सिल्वर को निवेश के नजरिए से भी देखने लगे हैं। अगर आप भी गोल्ड और सिल्वर ईटीएफ में पैसा लगाते हैं तो ये आर्टिकल आपके लिए है।

ICICI प्रूडेंशियल सिल्वर ईटीएफ देश का सबसे पुराना सिल्वर ईटीएफ है। इसमें आप एसआईपी का लमसम दोनों तरीके से निवेश कर सकते हैं। इस ईटीएफ की शुरुआत 24 जनवरी 2022 से हुई। तब से लेकर अब तक इस ईटीएफ ने लगभग 250 फीसदी का रिटर्न दिया है।

कितना है एक्सपेंस रेश्यो- ICICI प्रूडेंशियल सिल्वर ईटीएफ का एक्सपेंस रेश्यो 0.40 फीसदी दर्ज किया गया है। इसका AUM 16,848 करोड़ रुपये है।

लो रिकॉर्ड और हाई रिकॉर्ड- 52 हफ्तों में इस सिल्वर ईटीएफ में 88.80 रुपये का लो रिकॉर्ड और 373.50 रुपये प्रति का हाई रिकॉर्ड बनाया है।

आप निवेश करें या नहीं- अगर आप चांदी में निवेश के उद्देश्य से लंबे समय के लिए निवेश करना चाहते हैं तो सिल्वर ईटीएफ बेस्ट ऑप्शन है। फिलहाल कमोडिटी मार्केट में काफी हलचल है इसलिए सिल्वर हो या गोल्ड ईटीएफ इसमें एसआईपी के जरिए किस्तों में ही निवेश करें।

जंग में ईरान को फायदा ही फायदा! खार्ग टर्मिनल के जरिए कर रहा गाढ़ी कमाई; खाड़ी देशों को लगा जोर का झटका

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका-इजरायल ने जब 28 फरवरी को ईरान पर हमला किया था तब यह सोचा भी नहीं होगा कि तेहरान इस तरह से पलटवार करेगा। इस जंग को ईरान ने अपने फायदे में बदल दिया है और जमकर पैसे कमा रहा है।

अमेरिका ने खार्ग आइलैंड के पास सैन्य ठिकानों को टारगेट तो किया लेकिन वैश्विक तेल संकट के डर से तेल टर्मिनल को सीधेतौर पर निशाना नहीं बनाया। अब ईरान इसी चीज का फायदा उठा रहा है और खार्ग टर्मिनल को चालू करके रखा है। घोस्ट फ्लीट के जरिए चीन को जमकर सप्लाई कर रहा है।

इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी और एसएंडपी ग्लोबल के मुताबिक, ईरान हर दिन 1.7 से 2 मिलियन (17 से 20 लाख) बैरल तेल एक्सपोर्ट कर रहा है। उसका करीब-करीब 90 प्रतिशत तेल अभी भी खार्ग टर्मिनल के जरिए एक्सपोर्ट हो रहा है। इतना ही नहीं रिपोर्ट तो ऐसी भी हैं कि होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले विदेशी जहाजों ईरान 16.5 करोड़ रुपये का टोल वसूल कर रहा है।

खाड़ी देशों का गिरा प्रोडक्शन- अमेरिकी-इजरायली हमलों के बाद ईरान ने खाड़ी देशों पर हमले किए। उसकी होर्मुज स्ट्रेट पर पकड़ और लगातार हमलों की वजह से सऊदी अरब, कतर, इराक, कुवैत और यूएई जैसे खाड़ी देशों की सप्लाई प्रभावित हुई है। सुरक्षित समुद्री रास्तों की कमी, बढ़ते हमले और लॉजिस्टिक में आने वाली परेशानियों की वजह से इन देशों के प्रोडक्शन में भी 70 प्रतिशत तक गिरावट आई है।

वेदांता के अनिल अग्रवाल इकोजेन से बदलने जा रहे पूरी इंडस्ट्री का गेम

नई दिल्ली (एजेंसी)। वेदांता ग्रुप के चेयरमैन अनिल अग्रवाल की कंपनी हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड ने एक बड़ा कदम उठाया है। कंपनी सस्टेनेबल और ग्रीन मैन्युफैक्चरिंग की दिशा में काम करने जा रही है। हिंदुस्तान जिंक दुनिया की सबसे बड़ी इंटीग्रेटेड जिंक उत्पादक कंपनी है। अब उसने टाटा स्टील के साथ अपनी दो दशक पुरानी साझेदारी को और मजबूत करते हुए एक नया समझौता किया है। इस साझेदारी के तहत टाटा स्टील अपने स्टील निर्माण में हिंदुस्तान जिंक के लो-कार्बन जिंक सॉल्यूशन इकोजेन का इस्तेमाल करेगी।

क्या है इकोजेन और इसके फायदे- इकोजेन एशिया का पहला लो-कार्बन (कम कार्बन वाला) जिंक है, जिसे पूरी तरह से रिन्यूएबल एनर्जी (अक्षय ऊर्जा) का उपयोग करके बनाया जाता है। पारंपरिक जिंक के मुकाबले इकोजेन का कार्बन फुटप्रिंट 75% तक कम है। प्रति टन जिंक के उत्पादन में 1 टन से भी कम CO_2 का उत्सर्जन होता है।

गैल्वनाइज्ड स्टील को जंग से बचाने के लिए जिंक का इस्तेमाल होता है। इकोजेन के उपयोग से प्रति टन गैल्वनाइज्ड स्टील पर लगभग 400 किलोग्राम CO_2 उत्सर्जन को रोका जा सकेगा। यह पहल इंफ्रास्ट्रक्चर, ऑटोमोटिव और रिन्यूएबल एनर्जी जैसे सेक्टर्स को अपने डीकार्बोनाइजेशन (कार्बन मुक्तीकरण) लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेगी।

इस साझेदारी पर हिंदुस्तान जिंक के सीईओ, अरुण मिश्रा ने कहा, ÷इकोजेन ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग की बदलती जरूरतों के लिए सस्टेनेबल मेटल सॉल्यूशन प्रदान करने के हमारे विजन को दर्शाता है। टाटा स्टील के साथ हमारी यह साझेदारी भारत के औद्योगिक इकोसिस्टम में ग्रीन सप्लाई चेन को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा मील का पत्थर है।

वहीं, टाटा स्टील के चीफ प्रोक्योरमेंट ऑफिसर, रंजन सिन्हा ने कहा, हम अपने साहिबाबाद प्लांट में पर्यावरण के अनुकूल जिंक मेटल इकोजेन की डिलीवरी के लिए हिंदुस्तान जिंक को बधाई देते हैं। यह सहयोग हमारे सप्लायर इकोसिस्टम के बीच ग्रीन टेक्नोलॉजी और सस्टेनेबल प्रथाओं को आगे बढ़ाने की हमारी साझा प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है।

कंपनी की इस बड़ी घोषणा के बावजूद सोमवार को हिन्दुस्तान जिंक शेयर में स्टॉक मार्केट में हुई भारी बिकवाली के कारण दबाव देखने को मिला। हिंदुस्तान जिंक का शेयर बीएसई सेंसेक्स और एनएसई निफ्टी 50 में 2 प्रतिशत से अधिक की गिरावट के कारण एनएसई पर 5.97 प्रतिशत गिरकर ?484 के इंट्राडे लो पर आ गया। 28 जनवरी 2026 को बनाए गए ?733 के अपने 52-सप्ताह के उच्चतम स्तर से यह शेयर अब तक लगभग 40त्न टूट चुका है।

वहीं वेदांता के शेयर में भी आज 5त्न की गिरावट दर्ज की गई और यह ?637 पर ट्रेड कर रहा था, जो 1 फरवरी के बाद का सबसे निचला स्तर है। हालांकि, बाजार की इस गिरावट के बीच 23 मार्च 2026 को वेदांता के बोर्ड ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए ?11 प्रति शेयर के तीसरे अंतरिम डिविडेंड की घोषणा की है। यह स्टॉक 27 मार्च 2026 से एक्स-डिविडेंड के रूप में ट्रेड करेगा।

हिंदुस्तान जिंक क्या काम करती है- वेदांता ग्रुप की कंपनी हिंदुस्तान जिंक दुनिया की सबसे बड़ी इंटीग्रेटेड जिंक उत्पादक और शीर्ष 5 ग्लोबल सिल्वर उत्पादक कंपनियों में से एक है। भारत के प्राइमरी जिंक मार्केट में इसकी 77त्न हिस्सेदारी है और यह 40 से अधिक देशों में सप्लाई करती है। स्ञ्क्क ग्लोबल कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी असेसमेंट 2025 द्वारा इसे लगातार तीसरे वर्ष मेटल्स और माइनिंग कैटेगरी में दुनिया की सबसे सस्टेनेबल कंपनी के रूप में मान्यता दी गई है।

कंपनी ने 2050 या उससे पहले नेट जीरो उत्सर्जन हासिल करने का लक्ष्य रखा है और यह एक प्रमाणित 3.32 गुना वाटर-पॉजिटिव कंपनी भी है।

अनिल अग्रवाल ने दिखाई दरियादिली, देंगे 4300 करोड़ डिविडेंड, हर शेयर पर कितना पैसा मिलेगा?

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के मशहूर माइनिंग कारोबारी अनिल अग्रवाल की कंपनी वेदांता लिमिटेड ने अपने शेयरधारकों को बड़ी खुशखबरी दी है।

कंपनी के बोर्ड ने 23 मार्च को डिविडेंड देने का एलान किया है और इसके साथ ही वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए तीसरे अंतरिम डिविडेंड को मंजूरी दे दी। कंपनी ने एक्सचेंज को दी फाइलिंग में यह सूचना दी है। उधर, वेदांता लिमिटेड के शेयर आज 4 फीसदी से ज्यादा गिरे हुए हैं और 643 रुपये के करीब कारोबार कर रहे हैं।

FY26 में तीसरा अंतरिम डिविडेंड- एक्सचेंज को दी फाइलिंग में कंपनी ने कहा, वेदांता लिमिटेड के निदेशक मंडल (बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स) की सोमवार, 23 मार्च 2026 को हुई बैठक में वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए तीसरे अंतरिम डिविडेंड (लाभांश) को मंजूरी दे दी गई है। कंपनी ने 1 की फेस वैल्यू वाले प्रत्येक इक्विटी शेयर पर 11 अंतरिम डिविडेंड देने का एलान किया है।

कंपनी ने बताया कि इस डिविडेंड के भुगतान में कंपनी लगभग 4,300 करोड़ रुपये खर्च करेगी।

अपनी ही औलादों से घिरा पाकिस्तानः चरम पर आतंकवाद, बना दुनिया का सबसे ज्यादा प्रभावित देश; रिकॉर्ड स्तर पर मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान ने वर्षों तक आतंकवादी संगठनों को अपनी रणनीति का हिस्सा बनाया, लेकिन अब वही नीति उसके लिए भारी पड़ रही है। ताजा रिपोर्ट के अनुसार, साल 2025 में पाकिस्तान दुनिया का सबसे ज्यादा आतंक प्रभावित देश बन गया है, जहां हमले, मौतें और हिंसा लगातार बढ़ रही है।

ग्लोबल टेररिज्म इंडेक्स 2026 के मुताबिक, पाकिस्तान पहली बार सूची में शीर्ष पर पहुंचा है। साल 2025 में यहां 1139 लोगों की मौत हुई, 1045 हमले हुए, 1595 लोग घायल हुए और 655 लोगों को बंधक बनाया गया। पाकिस्तान का स्कोर 8.574 रहा, जो सभी देशों से ज्यादा है। यह 2013 के बाद सबसे घातक साल रहा और लगातार छठा साल है जब आतंक से मौतों में बढ़ोतरी हुई है। दक्षिण एशिया में भी यही एक देश है जहां हालात बिगड़े हैं, बाकी देशों में सुधार हुआ है।

किन इलाकों में सबसे ज्यादा असर- रिपोर्ट के अनुसार, सबसे ज्यादा हमले खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान में हुए। कुल हमलों का 74त्न और मौतों का 67% इन्हीं दो प्रांतों में दर्ज किया गया।

सबसे सक्रिय आतंकी संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) रहा। 2025 में इस संगठन ने 595 हमले किए और 637 लोगों की जान ली, जो कुल मौतों का 56त्न है।

हत्या जैसी टारगेटेड घटनाएं 450% तक बढ़ गई और पुलिस पर हमले भी बढ़े हैं। टीटीपी अब ड्रोन का इस्तेमाल भी कर रहा है, जिससे खतरा और बढ़ गया है।

सीमा पार से मिल रहा समर्थन- रिपोर्ट बताती है कि 6000 से 6500 टीटीपी लड़ाके अफगानिस्तान के अंदर से काम कर रहे हैं और वहीं से पाकिस्तान में हमले कर रहे हैं। करीब 85त्न हमले अफगान सीमा के 10 से 50 किलोमीटर के दायरे में होते हैं।

पाकिस्तान के कबायली इलाकों को लंबे समय तक ऐसे समूहों का सुरक्षित ठिकाना माना जाता रहा है। यहां से तालिबान, हक्कानी नेटवर्क, अल-कायदा और बाद में टीटीपी जैसे संगठन मजबूत हुए। 2021 में अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी के बाद टीटीपी को और सुरक्षित ठिकाना मिल गया। पाकिस्तान ने अफगान सरकार से कार्रवाई की मांग की, लेकिन कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया।

पुरानी नीति अब उलटी पड़ रही- रिपोर्ट में कहा गया है कि पाकिस्तान ने पहले अच्छे और बुरे तालिबान में फर्क किया था, लेकिन अब यह रणनीति काम नहीं कर रही। जो समूह पहले बाहर इस्तेमाल होते थे, अब देश के अंदर ही हमले कर रहे हैं। मार्च 2025 में बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी ने एक ट्रेन को हाईजैक कर 442 लोगों को बंधक बना लिया, जो दुनिया के सबसे बड़े आतंकी हमलों में शामिल है। अब यह संगठन सिर्फ अलगाववाद नहीं, बल्कि सीधे राज्य के खिलाफ हमले कर रहा है। इसके निशाने पर चीनी नागरिक और सीपेक प्रोजेक्ट भी हैं। रिपोर्ट इसे सरकार की लंबे समय से चली आ रही सख्त नीतियों का नतीजा मानती है, जिसमें राजनीतिक समाधान की कमी रही।

माता कात्यायनीः विवाह और सुख-समृद्धि की देवी

दैनिक दिव्य संवाद/ सौरभ मिश्रा/ वाराणसी।नवरात्र के छठे दिन माता कात्यायनी के दर्शन पूजन विधान है। माता कात्यायनी देवी दुर्गा का छठा स्वरूप हैं, जिनका जन्म महर्षि कात्यायन के घर पुत्री के रूप में हुआ था। देवी ने महिषासुर जैसे दैत्य का वध कर धर्म की रक्षा की और उन्हें 'महिषासुरमर्दिनी' भी कहा जाता है। कात्यायनी माता की पूजा करने से विवाह बाधाएँ दूर होती हैं, और जीवन में सुख-समृद्धि व आत्मविश्वास बढ़ता है।

वाराणसी मे स्थित नवरात्र के छठे दिन माता कात्यायनी के रूप मे दर्शन मिलता है भोर मे मंदिर पूजन के बाद आम भक्तों के लिये पट खोल दिया गया भक्त कतारबद्ध होकर माता के दर्शन कर रहें थे पौराणो की माने तो क्रोध से हुई माँ स्कंद पुराण में कहा गया है कि देवी के कात्यायनी रूप की उत्पत्ति परमेश्वर के नैसर्गिक क्रोध से हुई थी और इन्होंने देवी पार्वती द्वारा दिए गए शेर पर विराजमान होकर महिषासुर का वध किया था।

अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष मिलता है। इनकी पूजा करने से भक्तों को आसानी से अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। उनको रोग, संताप और अनेकों प्रकार के कष्टों से मुक्ति मिलती है। देवी भागवत पुराण के अनुसार देव के इस स्वरूप की पूजा करने से शरीर कांतिमान हो जाता है।

इनकी आराधना से गृहस्थ जीवन सुखमय रहता है। और माँ दुर्गा के छठवें रूप की पूजा से राहु और कालसर्प दोष से जुड़ी परेशानियाँ भी दूर हो जाती है। मन चाहा दूल्हा पाने के माँ को हल्दी और दही का लेप मन्दिर के पुजारी ने बताया कि नवरात्रि में रोज काफी भीड़ होती है।

भक्तों की पर आम दिनों में भी मंगलवार और गुरुवार को यहाँ कुवारी व्याह योग्य लड़कियों की लंबी लाइन लगती है। मान्यता है कि मंगलवार और गुरुवार को जो भी लड़की जिसकी शादी न हो रही हो या किसी तरह की अड़चन आ रही है तो वह लगातार अगर मंगल और गुरुवार को देवी के विग्रह पर दही और हल्दी का लेप लगाए तो उसे मनचाहा दूल्हा जरूर मिलता है।

विवाह की सारी अड़चन दूर हो जाती है माता के ठीक सामने शिवलिंग रूप में महादेव हैं मंदिर पुजारी ने कहा की यहाँ पे परिसर में माता रानी के विग्रह के ठीक सामने जो शिवलिंग है वह आत्म वीरेश्वर हैं इन्हें श्रीकाशी विश्वनाथ की आत्मा के रूप में मान्यता प्राप्त है।

इसके अलावा परिसर में नव ग्रह के विग्रह भी स्थापित हैं। ऐसे पड़ा माता नाम कात्यायनी महर्षि कात्यायन के आश्रम में माता रानी प्रकट हुए। महर्षि ने उन्हें कन्या (भगवती) माना। इस कारण भगवती कात्यायनी नाम से विख्यात हुई। ऐसा है माता का स्वरूप तीनों नेत्रों से विभूषित सौम्य मुखवाली भगवती का ध्यान करने से सांसारिक कष्टों से छुटकारा मिल जाता है। भगवती महाभय से रक्षा करती हैं। एते वदनं सांम्य लोचनत्रय भूपितम। पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोस्तुते।।

जंगली सूअर ने किया ग्रामीण पर हमला, गंभीर घायल

शाजापुर। सोमवार को जानवरों के हमलों से दो अलग-अलग क्षेत्रों में हड़कंप मच गया। मोहन बड़ोदिया में एक सांड ने राहगीरों और वाहनों को निशाना बनाया। वहीं ग्राम उकावता में एक जंगली सूअर ने ग्रामीण पर अचानक हमला कर उसे घायल कर दिया।

जानकारी के अनुसार सुबह करीब 9 बजे एक सांड ने गांव के दो लोगों पर हमला कर दिया, जो बाल-बाल बच गए। इसके बाद सांड ने बस स्टैंड पर खड़ी एक कार को भी टक्कर मारकर क्षतिग्रस्त कर दिया। सांड के बढ़ते आतंक को देखते हुए दोपहर 12 बजे दशहरा उत्सव समिति के सदस्यों ने मोर्चा संभाला। अशोक पाटीदार, नितेश पटेल और अन्य ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद सांड को रस्सियों की मदद से पेड़ से बांधा। जिसे बाद में जंगल में छोड़ दिया गया। इधर ग्राम उकावता में एक किसान पर एक जंगली सूअर ने हमला कर दिया। किसान असलम सोमवार दोपहर अपने खेत पर भैंस चरा रहे थे। तभी एक जंगली सूअर ने उन पर अचानक हमला कर दिया। सूअर ने किसान के हाथ और अंगूठे पर गंभीर घाव कर दिए और पेट पर भी हमला करने की कोशिश की। हालांकि किसान ने हिम्मत दिखाते हुए सूअर का मुकाबला किया और अपनी जान बचाई। सूचना मिलने पर डायल 112 की मदद से उन्हें तुरंत जिला अस्पताल पहुंचाया गया। फिलहाल डॉक्टर की निगरानी में उनका इलाला जारी है, लेकिन इस घटना के बाद से ग्रामीण इलाकों में दहशत का माहौल है।

डर या समझौता नहीं ! सोशल मीडिया पर भाजपा को घेरने वाले पंकज तिवारी आए आलाकमान की नजर में

सिंगोली। मध्यप्रदेश कांग्रेस में जहाँ एक ओर कई दिग्गज नेता खामोश नजर आते हैं, वहीं जावद विधानसभा के सिंगोली निवासी पंकज तिवारी अपने तीखे तेवरों से सोशल मीडिया पर तहलका मचाए हुए हैं। भाजपा और आरएसएस की नीतियों का मुखर विरोध करने वाले पंकज तिवारी ने अपनी निडर पोस्टों से न केवल सत्ता पक्ष को असहज किया है, बल्कि कांग्रेस आलाकमान का ध्यान भी अपनी ओर खींच लिया है।

दिग्विजय सिंह के करीबी और बेबाक अंदाज- पंकज तिवारी की कार्यशैली उन्हें जावद के अन्य स्थानीय नेताओं से अलग खड़ा करती है। वे न केवल भाजपा सरकार के खिलाफ मोर्चा खोलते हैं, बल्कि समय-समय पर कांग्रेस के भीतर की विसंगतियों पर भी बेबाकी से अपनी राय रखते हैं। सूत्रों की मानें तो पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह स्वयं पंकज तिवारी की सक्रियता से अच्छी तरह परिचित हैं।

सोशल मीडिया पर वन मैन आर्मी- नीमच जिले में पंकज तिवारी को कांग्रेस का ऐसा अकेला चेहरा माना जा रहा है जो सोशल मीडिया पर पूरी ताकत से भाजपा के गढ़ में सेंध लगाने का प्रयास रहे हैं। हालांकि, राजनीतिक गलियारों में चर्चा यह भी है कि डिजिटल मंच पर उनकी जितनी मजबूत पकड़ है, धरातल (ग्राउंड जीरो) पर अभी उन्हें उतनी ही सक्रियता दिखाने की जरूरत है।

बड़ी जिम्मेदारी की सुगबुगाहट- मध्यप्रदेश में कांग्रेस के इस चुनौतीपूर्ण समय में पार्टी को ऐसे ही प्रखर और बेबाक वक्ताओं की दरकार है। जिस तरह से तिवारी ने आलाकमान की नजरों में अपनी जगह बनाई है, उसे देखते हुए कयास लगाए जा रहे हैं कि उन्हें जल्द ही संगठन में कोई बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। यदि ऐसा होता है, तो यह जावद क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के लिए एक बड़ा संदेश होगा। अब देखना यह है कि क्या कांग्रेस नेतृत्व पंकज तिवारी के इस डिजिटल संघर्ष को जमीनी ताकत में बदलने के लिए उन्हें कोई आधिकारिक पद सौंपता है या नहीं।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत अधिकाधिक जल संरक्षण के कार्य चिन्हित कर तेजी से पूर्ण करवाएं -श्री चंद्रा

नीमच। जिले में गत 19 मार्च से प्रारंभ जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत सभी विभाग जल संरक्षण संरचनाओं के अधिकाधिक कार्य चिन्हित कर अपने विभाग की विस्तृत कार्य योजना तैयार कर, उसका समय सीमा में क्रियान्वयन सुनिश्चित करें। इस अभियान में किसी भी प्रकार की उदासीनता बर्दाश्त नही की जावेगी।यह निर्देश कलेक्टर श्री हिमांशु चंद्रा ने सोमवार को कलेक्टोरेट सभा कक्ष नीमच में जल गंगा सवर्धन अभियान की समीक्षा के दौरान सभी विभागों के जिला अधिकारियों को दिए। बैठक में जिला पंचायत सीईओं श्री अमन वैष्णव ,डीएफओं श्री एस.के. अटोदे , जल संसाधन , लो.स्वा.यां.विभाग , ग्रा.या.सेवा., लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री, उपयंत्री सहायक यंत्री एवं जिला अधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में सभी नगरीय निकायों को अमृत 1.0 के तहत निर्मित जल संरचाओं के जीर्णोद्धार, नालों नदियों के शोधन की कार्य योजना तैयार करने, जल संवर्धन संरचाओं से अतिक्रमण हटाने , नदी नालों की साफ-सफाई , हरित क्षेत्र विकास एवं पौधा रोपण की तैयारी करने के निर्देश दिए गये ।बैठक में वन विभाग को वन क्षेत्रों में बोल्डर चेक डेम , डबरा डबरी, भूजल संरक्षण कार्य, वन क्षेत्र मे पूर्व से निर्मित तालाबों के गहरीकरण के कार्य करवाने के लिए विस्तृत कार्य योजना तैयार करने के निर्देश दिए गए।

नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में जल चौपाल करें-- बैठक में कलेक्टर श्री चंद्रा ने सभी जनपद सीईओं और सभी सी.एम.ओं. को निर्देश दिए कि वे सभी नगरीय क्षेत्रों और ग्रामीण क्षेत्रों में पंचायत स्तर पर जल चौपाल आयोजित करें और इन जल चौपालों में स्थानीय जनप्रतिनिधियों और आमजनों की सहभागिता सुनिश्चित करें। जल चौपाल के आयोजन दौरान जल संरचनाओं की साफ-सफाई एव स्वच्छता के लिए श्रमदान के कार्यक्रम भी आयोजित किए जाए।बैठक में बताया गया कि जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत जिले में 221 जल संरचनाओं का जनसहयोग से गहरीकरण कर मिट्टी निकालने के लिए चिन्हित किया गया है। साथ ही 66 जल संरचनाए ,जीर्णोद्धार के लिए चिन्हित की गई है । जिले में 30 अमृत सरोवर निर्माण कार्य एवं 371 नवीन खेत तालाब निर्माण के कार्य भी चिन्हित किए गए है । कलेक्टर ने जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत स्वीकृत कार्य समय सीमा में पूर्ण करवाने के निर्देश सभी कियान्वयन ऐजेसियों को दिए है।

दूसरों के दुख को समझता है परमात्मा उसे अपना समझता है - महामंडलेश्वर

देवास। आपके बच्चे वो नहीं करते जो आप कहते है बच्चे वो करते है जो देखते है । आपके संस्कार में ही आपका भविष्य दिखाई देता है । आपने अपने माता पिता की सेवा नहीं की है तो यह निश्चित नहीं है कि आपके वृद्धा काल में बच्चों द्वारा आपकी सेवा हो । घर के संस्कार सेवा और भक्ति से जुड़े होगे तभी संतान आज्ञाकारी होगी। आज स्कूलों में भी शिक्षा नहीं जानकारी दी जाती है संस्कार की शिक्षा नहीं। किसी भूल वश हुए अपराप से हुए पाप को सिर्फ पश्चाताप की अग्नि ही जला कर नष्ट कर सकती है और पाप न करने का संताप, संकल्प , प्रतिज्ञा मनुष्य को पवित्र बना देती है । पाप से मुक्त मन ही परमात्मा से जुड़ पाता है। एक चिंगारी जलाकर भस्म कर सकती है,एक अमृत की बूंद मृत प्राणी को जीवन दे देती है। उसी प्रकार भगवान का एक नाम स्मरण आपको सदा पापों से मुक्त कर देता है। जो दूसरों के दुःख को समझता है परमात्मा उसे अपना समझता है। यह आध्यात्मिक एवं जीवन दर्शन के विचार चैत्र नवरात्रि में कैला देवी मंदिर में हो रही श्रीमद् भागवत कथा के चतुर्थ दिवस पर वृंदावन धाम के महामंडलेश्वर स्वामी भास्करानंद जी ने कथा प्रसंग में भक्त ध्रुव, भक्त प्रह्लाद के चरित्र का वर्णन करते कहे । आपने कहा कि संसार मैं और मेरे में ही परेशान है दुःख वही है जहां अपना है। सुख वहा है जिसकी मन बुद्धि में हर जगह हर एक में परमात्मा है। कीर्तन से मन का मेल धूल जाता है । कथा में समुद्र मंथन का वर्णन किया । रघुवंश का सुंदर वर्णन कर प्रभु श्री राम के जन्म की कथा। द्वापर युग का चित्रण कर भगवान कृष्ण जन्म अवतार की कथा में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की सुंदर झांकी के साथ नन्द के घर आनंद भयो जय कन्हैयालाल की भजन के साथ श्रोता भाव विभोर होकर नृत्य करने लगे। कथा में अयोध्या से आई लोकप्रिय नन्ही कवयित्री आहुति शुक्ला ने गीता के उपदेश छंद एवं सनातन युवा शक्ति को प्रेरित करने वाली वीर रस की राष्ट्र भक्ति की रचना- क्या कहते हो चीनी हमसे टकराएंगे ए चीन तुझको हम घोल कर चाय में पी जायेगे... प्रस्तुत कर श्रोताओं की दाद बटोरी।

कथा आयोजक मन्नूलाल गर्ग , दीपक गर्ग ,अनामिका गर्ग ने व्यास पीठ की पूजा की आरती में कांग्रेस पार्टी के जिला अध्यक्ष मनीष चौधरी, शहर कांग्रेस अध्यक्ष प्रयास गौतम, ब्लाक अध्यक्ष प्रतीक शास्त्री , नीरज नागर समाज सेवी प्रेम कुमार गोयल इंदौर सहित अनेक गणमान्य ने व्यास पीठ से गुरुदेव से आशीर्वाद लिया।

कांग्रेस में 'अपनों' की टकराहट- नीमच कांग्रेस में घमासान

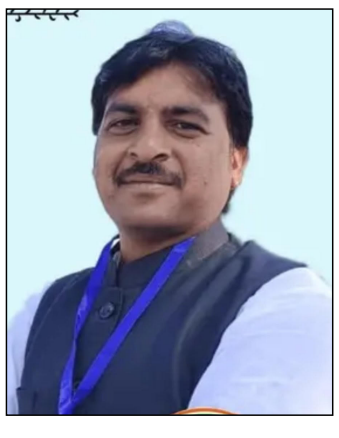

नीमच। मध्यप्रदेश के नीमच जिले में कांग्रेस के भीतर चल रही गुटबाजी एक बार फिर खुलकर सामने आ गई है। किसान कांग्रेस के जिलाध्यक्ष पद पर बालकिशन धाकड़ की नियुक्ति के बाद पार्टी के स्थानीय नेताओं और उनके समर्थकों के बीच असंतोष बढ़ गया है।

जावद विधानसभा क्षेत्र से उभरते किसान नेता के रूप में पहचान बना चुके बालकिशन धाकड़ को जब पार्टी आलाकमान ने जिम्मेदारी सौंपी, तो कुछ नेताओं ने इसका विरोध शुरू कर दिया। नियुक्ति के बाद लगातार शिकायतों का दौर चलता रहा, जिसके चलते किसान कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष धर्मेन्द्रसिंह चौहान को प्रदेश के 12 जिलाध्यक्षों की नियुक्तियां होल्ड पर रखनी पड़ीं।

हालांकि यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि किन-किन जिलों के अध्यक्षों की नियुक्ति रोकी गई है, लेकिन जिस तरह से जावद क्षेत्र में सोशल मीडिया पर आरोप-प्रत्यारोप तेज हुए हैं, उससे बालकिशन धाकड़ का नाम भी इस सूची में शामिल होने की चर्चा है।

दिलचस्प बात यह है कि नीमच जिला कांग्रेस अध्यक्ष तरुण बाहेती ने स्वयं सोशल मीडिया के माध्यम से धाकड़ को बधाई दी थी, जिससे यह संकेत मिलता है कि संगठन का एक बड़ा वर्ग उनके समर्थन में है। इसके बावजूद अंदरूनी खींचान थमने का नाम नहीं ले रही।

जावद विधानसभा में पहले से ही कई दावेदार सक्रिय हैं। समंदर पटेल और सत्यनारायण पाटीदार जैसे नेता चुनावी तैयारी में जुटे हैं, वहीं निष्कासित नेता राजकुमार अहीर की संभावित वापसी भी समीकरणों को बदल सकती है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यदि समय रहते गुटबाजी पर काबू नहीं पाया गया, तो इसका सीधा फायदा भाजपा को मिल सकता है।

स्थानीय स्तर पर चर्चाएं हैं कि यदि बालकिशन धाकड़ को पहले नियुक्त किया गया है तो उन्हें हटाना पार्टी के लिए नुकसानदायक साबित हो सकता है। इससे जावद में नई गुटबाजी और गहराने की आशंका है।

कुल मिलाकर, नीमच कांग्रेस में चल रहा यह विवाद आगामी विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी के लिए चिंता का विषय बनता जा रहा है। यदि आपसी मतभेद इसी तरह बढ़ते रहे, तो संगठनात्मक एकता पर गंभीर सवाल खड़े हो सकते हैं।

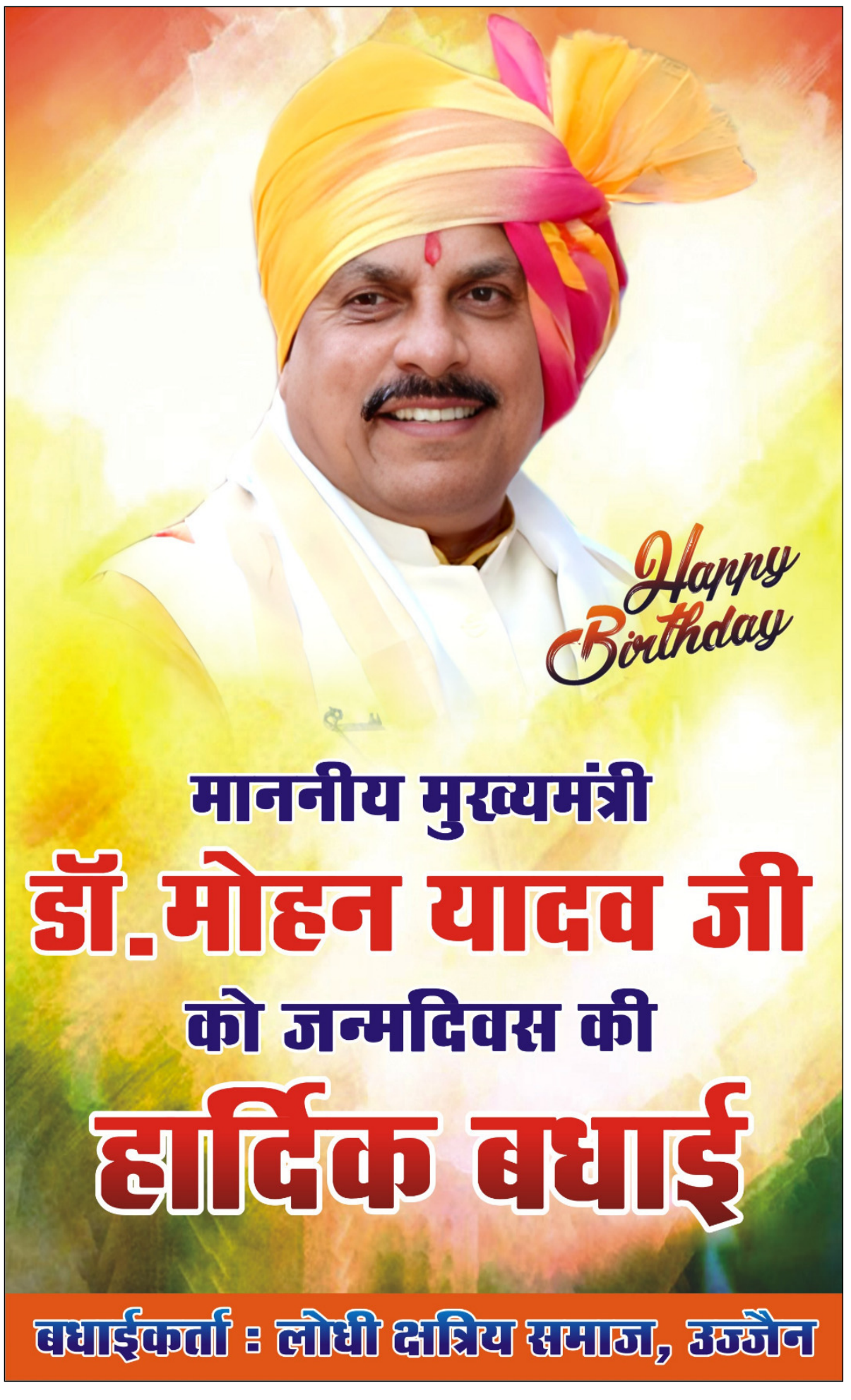

मालिक, प्रकाशक, मुद्रक अशोक त्रिपाठी मो: 9425379389 द्वारा एमआईजी ए-17/1, वेद नगर, नानाखेडा, उज्जैन (म.प्र.) से प्रकाशित कर प्रियंका ऑफसेट, 2/10 पिपलीनाका, भैरुगढ रोड, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित, सम्पादक : अभय नरवरिया मो: 9584111186 (सभी वाद-विवादों का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)